



कर्नाटक सरकार

हिंदी सुमन

प्रथम भाषा हिंदी

Hindi First Language

Part - 2



नौवीं कक्षा

Ninth Standard

Karnataka Textbook Society (R.)

6th Cross, Malleshwaram,

Bengaluru - 560 003.

अनुक्रमणिका



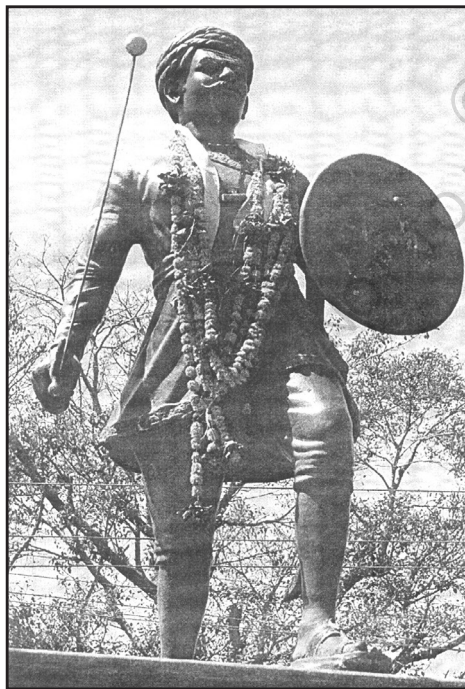
क्र.सं.	शीर्षक	विधा	पृ.सं.
11	क्रांतिवीर संगोल्ली रायण्णा	व्यक्ति- परिचय	1
	आओ जानें अपना कर्नाटक	परियोजना	10
12	वाङ्मू	कहानी	12
13	कन्यादान	कविता	21
14	जान से प्यारे	एकांकी	26
15	नागरिकों के मूल अधिकार	निबंध	45
	सीप समान बनो : एक लक्ष्य चुन लो	पूरक वाचन	53
16	रसखान के सवैये	मध्यकालीन कविता	55
17	बचपन	संस्मरण	62
18	प्राकृतिक स्थल - बदरीनाथ	यात्रा वर्णन	72
	पाप और पुण्य	पूरक वाचन	78
19	मीराबाई के पद	मध्यकालीन कविता	80
प्रचलित कहावतें, निबंध, पत्र-लेखन			85

क्रांतिवीर संगोल्ली रायण्णा



- संकलित

आशय: भारत की स्वतंत्रता के लिए लड़नेवाले अनगिनत देश भक्तों में संगोल्ली रायण्णा भी एक थे। इन्होंने कर्नाटक के संगोल्ली नामक छोटे से संस्थान में ठहरकर उज्ज्वल क्रांति की ऐसी चिनगारी जलायी थी, जिस के फलस्वरूप अंग्रेज़ साम्राज्य आंशिक रूप में ही सही तहस-नहस हो चुका था। देशानुराग का सात्विक भाव भरनेवाले क्रांतिकारी संगोल्ली रायण्णा, कर्नाटकवासियों के लिए ही नहीं, पूरे भारतवासियों के लिए भी वंदनीय हैं।



स्वतंत्रता से पूर्व भारत में अनेक संस्थान थे और इन संपन्न संस्थानों पर अंग्रेज़ सरकार अपनी हुकूमत चलाने लगी थी। प्रायः अंग्रेज़ लोग राजाओं के बीच कलह निर्माण कर आपस में लड़वाकर उनको कमजोर बनाते थे; धीरे धीरे उन संस्थानों पर अपना कब्ज़ा जमाते थे। हाँ, अंग्रेज़ों के धोखे से एक वीर भी मारा गया था- एक क्रांतिवीर संगोल्ली रायण्णा। कित्तूर की स्वाधीनता को बनाए रखने के लिए व्यापारी मनोवृत्ति वाले अंग्रेज़ों के दाँत खट्टे कर सबक सिखाने का श्रेय रायण्णा को मिलना चाहिए।

कित्तूर से नौ मील दूरी पर संगोल्ली नामक छोटा सा गाँव स्थित है । इसी गाँव में गड़रिये परिवार में रायण्णा का जन्म सन् 15 अगस्त, सन् 1793 ई. को हुआ । इनके पिताजी का नाम भरमण्णा और माता का नाम चंचोबा था, जो सात्विक स्वभाववाले थे । इनके भाई का नाम सिद्दण्णा था । रायण्णा की जीवन संगिनी का नाम मल्लव्वा था । भाई सिद्दण्णा के संग रायण्णा भी कसरत के साथ-साथ शस्त्राभ्यास भी किया करते थे। वे अपने साथियों में अधिक सुन्दर और प्रभावशाली दिखाई देते थे । अपने परिश्रम के फलस्वरूप कित्तूर रानी चेन्नम्मा के राज्य में रायण्णा मुख्य सेनापति के पद पर आरूढ़ हुए । धीरे-धीरे रायण्णा से प्रभावित होकर इनके साथी बालण्णा और चेन्नबसप्पा ने भी अपने साहस और शौर्य का परिचय दिखाया । इनकी प्रतिभा से प्रभावित होकर रानी चेन्नम्मा ने इन दोनों को अपना अंगरक्षक चुन लिया ।

साम्राज्याकांक्षी अंग्रेज धीरे-धीरे हिंदुस्तान के एक-एक राज्य को अपने कब्जे में करते जा रहे थे । उन दिनों, कित्तूर एक संपन्नशाली प्रांत बनकर प्रसिद्धि पा रहा था । राज्य धन-धान्य, सोना-चाँदी और मानिकों से समृद्ध था । अंग्रेजों की बुरी नज़र कित्तूर पर पड़ना स्वभाविक था । जब चेन्नम्मा को इसकी जानकारी मिली, उसने गाँव गाँव में ढिंढोरा पिटवाकर राज्य की सुरक्षा के लिए वीर युवकों को इकट्ठा किया । खुद रायण्णा भी अनेक उत्साही युवकों को साथ में ले आए । अंग्रेजों को जन्मभूमि से ही खदेड़ने के लिए स्वस्थ सेना की पूरी तैयारी की । ब्रिटिश अधिकारी थैकरे ने कित्तूर के खज़ाने को हथियाने के लिए सन् 21 अक्तूबर, सन् 1824 ई. को अपनी भारी सेना के साथ कित्तूर पर आक्रमण बोल दिया । इसके लिए पहले से ही तैयार रायण्णा ने अपने साथियों में शौर्य और उत्साह भरकर अंग्रेजों के छक्के छुड़ा दिए । अंग्रेजों के अनेक सैनिकों को मटियामेट कर, खून की नदियाँ बहा दीं ।

भयभीत ब्रिटिश कलेक्टर थैकरे ने अंत में अपनी सेना को वापसी का आदेश दिया, परंतु देरी हो चुकी थी। लड़ाई में रायण्णा और बालण्णा दोनों ने मिलकर थैकरे की गरदन उड़ा दी थी, फलस्वरूप अंग्रेजी सेना में खलबली मच गयी। रानी चेन्नम्मा को विजय मिली अंग्रेजों में क्षोभ और रोष की भावना और अधिक भड़क उठी। इससे बेचैन अंग्रेज आगे चलकर बंबई, सोलापूर, बेलगवि, बल्लारी, आदि स्थलों में भारी सेना इकट्ठा कर युद्ध की तैयारी में जुट गए।

मगर इधर रानी चेन्नम्मा भी कहाँ चैन की साँस लेनेवाली थी ? उन्होंने भी गाँव गाँव जाकर युवकों में देशभक्ति की ज्वाला को प्रज्ज्वलित कर करीब दस हजार सिपाहियों की बलशाली सेना तैयार की। सन् 1824 दिसंबर में, फिर से घमासान युद्ध हुआ। इसमें अंग्रेजों की तोपों के सम्मुख कित्तूर खामोश हो गया। अंग्रेजों की जीत हुई। अंग्रेज चन्नम्मा को गिरफ्तार कर आज़ादी की ख्वाहिश को मिटाना चाहते थे। मगर देश के ईमानदार स्वतंत्रता प्रेमियों की इच्छा प्रबल हुई। इस युद्ध में वीर रायण्णा और गुरुसिद्धप्पा ने रानी की रक्षा करने की ठान ली थी। वे रानी और उसके राजपरिवार को लेकर संगोल्ली गाँव निकल पड़ा मगर कुछ एक देशद्रोहियों की कुचाल से अंग्रेज सैनिकों ने चेन्नम्मा और राजपरिवार को बंदी बनाकर बैलहोंगल के कारागार में डाल दिया।

थोड़े ही दिनों में अंग्रेज सरकार ने कुछ युद्ध कैदियों को कारागार से रिहा कर दिया। छूटनेवालों में रायण्णा भी थे। रिहाई पाते ही रायण्णा ने दृढ़ संकल्प कर लिया कि किसी भी हालत में विदेशियों के चंगुल से कित्तूर को छुड़वाकर चेन्नम्मा को फिर से रानी बनायेंगे। अपनी योजना साकार करने, रायण्णा अब धैर्य और विवेचन के साथ कदम बढ़ाने लगे। अपने ही गाँव के लोग जो परिस्थितिवश लुटेरे बन चुके थे, उनको भी अपने साथ मिलाकर बड़ी आक्रामक योजना बनायी। इस योजना की रूप-रेखा के लिए उन्होंने आफ्रिका

के गजवीर नामक व्यक्ति की मदद ली । इससे अंग्रेजों को नाकों चने चबाने पड़े। इस घटना के बाद अंग्रेज रायण्णा से इतने हैरान और सहम गए कि, उन्होंने ऐलान किया कि, जो रायण्णा को पकड़ लाएगा उसे बहुत बड़ा इनाम दिया जाएगा ।



रायण्णा को फँसाने के लिए अंग्रेजों के पक्ष में काम करनेवाले अमलदार कृष्णराय ने षड्यंत्र रचा । उन्होंने खुदानपुर के लिंगनगौडा और नेगिनाल गाँव के कण्णगौडा और उनके सेवक लक्कण्णा को रायण्णा का विश्वास पाने के लिहाज से भेज दिया । रायण्णा के साथ उन लोगों ने युद्ध में सहायता करने का झूठा विश्वास दिखाया और पंद्रह दिनों में रायण्णा के गुप्तवास का पता भी जान लिया।

एक दिन रायण्णा लक्कण्णा के साथ स्नान करने गए थे । रायण्णा सदा अपने पास कटार रखते थे । मगर उस दिन उन्होंने स्नान करने के बाद कपड़े बदलते वक्त कमर में टंगी अपनी कटार को लक्कण्णा के हाथ में सौंप दिया । इतने में लिंगनगौडा और वेंकण्णगौडा जो सरकारी पोशाक में थे, रायण्णा को दबोचने आ कूदे । रायण्णा कटार के बिना असहाय थे, इसलिए अंग्रेजों ने आसानी से रायण्णा को गिरफ्तार कर जेल भेज दिया ।

सन् 1830 ई. में सेना न्यायालय में रायण्णा को फाँसी की सजा सुनाई गई। लेकिन न्यायप्रिय अंग्रेज अफसर रायण्णा के निजी शौर्य और जनोपयोगी कार्य को मद्देनजर रखते हुए उनको कड़ी फाँसी की सजा देना नहीं चाहते थे। लेकिन अंग्रेजों के वफ़ादार लिंगनगौडा और वेंकण्णगौडा की जिद के कारण रायण्णा को देश-द्रोही करार दिया गया। अंत में रायण्णा को 26 जनवरी, सन् 1831 ई. में बेलगाम जिले के खानापुर तहसील के अंतर्गत नंदगड गाँव में फाँसी दी गई। आज भी वहाँ बरगद का पेड़ है, जिस पर शहीद रायण्णा को लटकाया गया था।



जब रायण्णा को फाँसी पर लटकाया जा रहा था, तब उन्होंने अपनी अंतिम इच्छा जताई कि मैं पुनः इसी देश में जन्म लूँगा और अंग्रेजों को अपनी मातृभूमि से भगा दूँगा।

रायण्णा की मृत्यु के बाद उनकी अस्थियों को नंदगड गाँव में ही दफनाया गया। उनके कुछ करीबी रिश्तेदार तथा मित्रों ने रायण्णा की समाधि बनाकर उसी के पास उनकी याद में अशोक स्तंभ स्थापित किया और एक बरगद का पेड़ भी लगाया। आज भी अनेक पर्यटक इस क्रांतिवीर की समाधि देखने नंदगड आते हैं। निर्माता आनंद अप्पुगोल ने दर्शन, जयप्रदा, निकिता तूरकाल आदि कलाकारों के साथ क्रांतिवीर संगोली रायण्णा नामक एतिहासिक कन्नड फिल्म भी बनाई है, जिस से रायण्णा का उज्ज्वल चरित्र भारतीय जनमानस में सदा के लिए अंकित हो जाएगा।

शब्दार्थ :

हुकूमत - शासन, कलह - झगड़ा, कमज़ोर - दुर्बल, कब्ज़ा - अधिकार, पकड़; सबक - सीख, माणिक - एक प्रकार का रत्न, खदेड़ना - भगा देना, हटा देना; क्षोभ - आंदोलन, कुचाल - बुरी हरकत, रिहा करना - मुक्त करना, चंगुल - पकड़, काबू; हैरान - चकित, परेशान; सहम - डर, ऐलान - घोषणा, लिहाज - विचार, ध्यान; कटार - तलवार, दबोचना - जब्त करना, मददेनज़र - दृष्टिगत, तहसील - उपाजिला, अस्थि - हड्डी।

मुहावरे :

दाँत खट्टे करना - परास्त करना, छक्के छुड़ाना - हौसला तोड़ देना, मटियामेट करना - नष्ट करना, बरबाद करना; खलबली मचना - हलचल होना, भड़क उठना - क्रोधित होना, उत्तेजित होना; ठान लेना - निश्चल करना, कदम बढ़ाना - आगे बढ़ना, नाकों चने चबवाना - बहुत तंग करना



मौखिक प्रश्न :

I. निम्न प्रश्नों का उत्तर दीजिए :

१. रायण्णा का जन्म कब हुआ ?
२. रायण्णा के माता-पिता का नाम क्या था ?
३. रायण्णा को फँसाने लिए किसने षड्यंत्र रचा ?
४. सेना न्यायालय ने रायण्णा को फाँसी की सजा कब सुनाई?

लिखित प्रश्न :

II. एक वाक्य में उत्तर लिखिए :

१. रायण्णा का जन्म किस परिवार में हुआ ?
२. रायण्णा के पिताजी का नाम क्या था ?
३. लड़ाई में रायण्णा और बालण्णा दोनों ने मिलकर किसकी गरदन उड़ा दी थी ?
४. रायण्णा सदा अपने पास क्या रखते थे ?
५. रायण्णा की मृत्यु के बाद उनकी अस्थियों को कहाँ दफनाया गया था ?

III. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर चार-पाँच वाक्यों में लिखिए :

१. संगोल्ली रायण्णा के परिवार का परिचय दीजिए ।
२. संगोल्ली रायण्णा ने अंग्रेजों के विरुद्ध कैसी क्रांति की ?
३. संगोल्ली रायण्णा को अंग्रेजों ने कैसे गिरतार किया ?

४. संगोल्ली रायण्णा का अंत कैसे हुआ और उसकी अंतिम इच्छा क्या थी?
५. रायण्णा की मृत्यु के बाद उसके आत्मीयों ने क्या किया ?
६. संगोल्ली रायण्णा को किस रूप में आज भी याद किया जाता है?

IV. रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए :

१. कित्तूर से.....मील दूरी पर स्थित संगोल्ली नामक छोटा सा गाँव स्थित है।
२. अंग्रेजों के अनेक सैनिकों को.....कर, खून कि नदियाँ बहा दी ।
३. सन् १८२४ दिसंबर में फिर से..... हुआ ।
४. अंग्रेजों ने आसानी से रायण्णा को कर जेल भेज दिया ।

V. अर्थ लिखकर वाक्यों में प्रयोग कीजिए :

१. ढिंढोरा पिटवाना
२. छक्के छुड़वाना
३. खलबली मचना
४. ठान लेना
५. नाकों चने चबाना

भाषा अध्ययन

I. विलोम शब्दों के सही जोड़े बनाइए :

उदा : छोटा × बड़ा

अ

ब

१. जन्म	×	कम
२. अपना	×	अनेक
३. झूठ	×	मृत्यु
४. एक	×	सच
५. अधिक	×	पराया

II. निम्नलिखित शब्दों के दो-दो पर्यायवाची शब्द लिखिए :

१) अंग २) सोना ३) लड़ाई ४) करीब

योग्यता विस्तार

- रायण्णा जैसे वीर लोगों का परिचय लिखकर कक्षा में चर्चा कीजिए ।
- वीर सेनानियों के चित्र इकट्ठा करके कक्षा में लगाइए ।

परियोजना

: आओ जानें, अपने कर्नाटक को :

चित्रों को पहचानिए और उनके बारे में चार-पाँच वाक्य में लिखिए।



1) _____



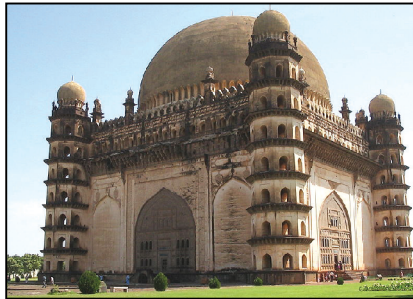
2) _____



3) _____



4) _____



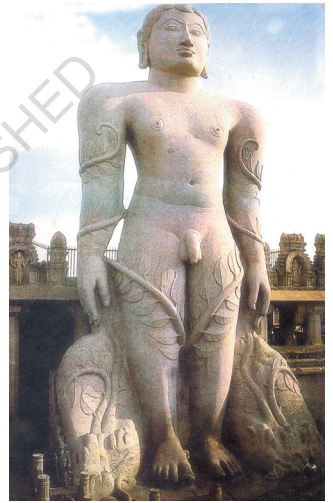
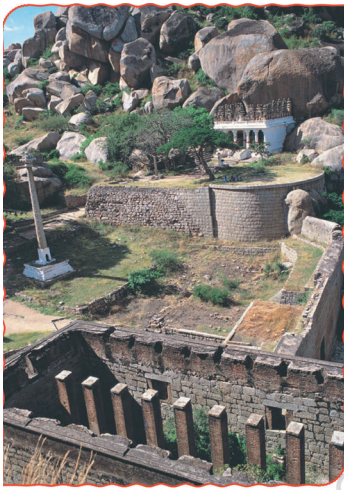
5) _____



6) _____



7) _____



6) _____ 7) _____ 8) _____

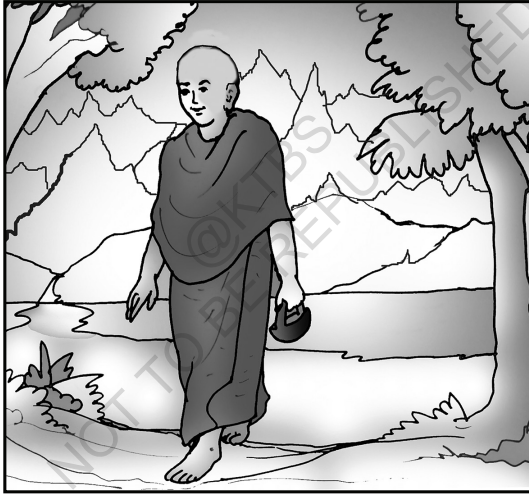


वाङ्मू -

- भीष्म साहनी

आशय : दुनिया में भिन्न स्वभाव के लोग होते हैं । कुछ मिलनसार होते हैं तो कुछ अपने आप में सिमटे रहते हैं। ऐसे ही भोला और अपने में सिमटे एक व्यक्ति वाङ्मू की कहानी यहां पर है।

तभी दूर से वाङ्मू आता दिखाई दिया ।



नदि के किनारे, लालमंडी की सड़क पर धीरे-धीरे डोलता - सा चला आ रहा था । धूसर रंग का चोगा पहने था और दूर से लगता था कि बौद्ध भिक्षुओं की भाँति उसका सिर घुटा हुआ है। पीछे शंकराचार्य की ऊँची पहाड़ी थी और ऊपर स्वच्छ नीला आकाश। सड़क के दोनों ओर ऊँचे-ऊँचे सफेदे के पेड़ों की कतारें। क्षण - भर के लिए मुझे लगा, जैसे वाङ्मू इतिहास के पन्नों पर से उतर कर आ गया है। प्राचीन काल में इसी भाँति देश-विदेश से आने वाले चीवरधारी भिक्षु पहाड़ों और घाटियों को लाँघकर भारत में आया करते

होंगे। अतीत के ऐसे ही रोमांचकारी धुंधलके में मुझे वाइचू भी चलता हुआ नज़र आया। जब से वह श्रीनगर में आया था, बौद्ध विहारों के खंडहरों और संग्रहालयों में घूम रहा था। इस समय भी वह लालमंडी के संग्रहालय में से निकलकर आ रहा था, जहाँ बौद्धकाल के अनेक अवशेष रखे हैं। उसकी मनःस्थिति को देखते हुए मुझे लगा वह सचमुच ही वर्तमान से कटकर अतीत के ही किसी कालखंड में विचर रहा था। “बोधिसत्त्वों से भेंट हो गई?” पास आने पर मैंने चुटकी ली।

वह मुस्करा दिया, हल्की टेढ़ी - सी मुस्कान, जिसे मेरी मौसेरी बहन डेढ़ दाँत की मुस्कान कहा करती थी, क्योंकि मुस्कराते वक्त वाइचू का ऊपर का होंठ केवल एक ओर से थोड़ा-सा ऊपर उठता था।

“संग्रहालय के बाहर बहुत-सी मूर्तियाँ रखी हैं। मैं वही देखता रहा उसने धीमे से कहा, फिर वह सहसा भावुक होकर बोला, एक मूर्ति के केवल पैर ही पैर बचे हैं....”

मैंने सोचा, आगे कुछ कहेगा, परंतु वह इतना भावविह्वल हो उठा था कि उसका गला रूँध गया और उसके लिए बोलना असंभव हो गया।

हम एक साथ घर की ओर लौटने लगे।

“महाप्राण के भी पैर ही पहले दिखाए जाते हैं।” उसने काँपती-सी आवाज़ में कहा और अपना हाथ मेरी कोहनी पर रख दिया। उसके हाथ का हल्का-सा कंपन धड़कते दिल की तरह महसूस हो रहा था।

आरंभ में महाप्राण की मूर्तियाँ नहीं बनाई जाती थीं ना! तुम तो जानते हो, पहले स्तूप के नीचे केवल पैर ही दिखाए जाते थे। मूर्तियाँ तो बाद में बनाई जाने लगी थीं।”

जाहिर है, बोधिसत्त्व के पैर देखकर उसे महाप्राण के पैर याद आए थे और वह भावुक हो उठा था। कुछ पता नहीं चलता था, कौन-सी बात किस बक्त वाङ्मू को पुलकाने लगे, किस बक्त वह गद्गद होने लगे।

"तुमने बहुत देर कर दी। सभी लोग तुम्हारा इंतजार कर रहे हैं। मैं चिनारों के नीचे भी तुम्हें खोज आया हूँ।" मैंने कहा।

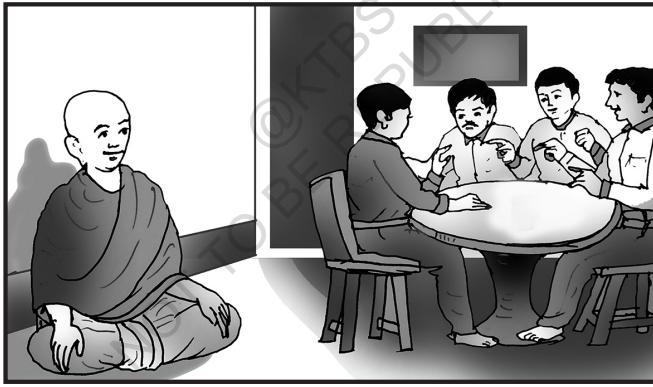
"मैं संग्रहालय में था..."

"वह तो ठीक है, पर दो बजे तक हमें हब्बाकदल पहुँच जाना चाहिए, वरना जाने का कोई लाभ नहीं।"

उसने छोटे-छोटे झटकों के साथ तीन बार सिर हिलाया और कदम बढ़ा दिए।

वाङ्मू भारत में मतवाला घूम रहा था। वह महाप्राण के जन्म स्थान लुंबिनी की यात्रा नंगे पाँव कर चुका था, सारा रास्ता हाथ जोड़े हुए। जिस - जिस दिशा में महाप्राण के चरण उठे थे, वाङ्मू मंत्रमुग्ध-सा उसी-उसी दिशा में घूम आया था और दो मृगशावक मंत्रमुग्ध-से झाड़ियों में से निकलकर उनकी ओर देखते रह गए थे, वाङ्मू एक पीपल के पेड़ के नीचे घंटों नतमस्तक बैठा रहा था, यहाँ तक कि उसके कथनानुसार उसके मस्तक में अस्फुट-से वाक्य गूँजने लगे थे और उसे लगा था, जैसे महाप्राण का पहला प्रवचन सुन रहा है। वह इस भक्तिपूर्ण कल्पना में इतना गहरा डूब गया था कि सारनाथ में ही रहने लगा था। गंगा की धार को दसियों शताब्दियों के धुँधलके में पावन जलप्रवाह के रूप में देखता। जब श्रीनगर में आया था, बर्फ से ढके पहाड़ों की चोटियों की ओर देखते हुए अक्सर मुझसे कहता - वह रास्ता ल्हासा को जाता है ना, उसी रास्ते बौद्ध ग्रंथ तिब्बत में भेजे गए थे। वह उस पर्वतमाला को भी पुण्य-पावन मानता था, क्योंकि उस पर बिछी पगडंडियों के रास्ते बौद्ध भिक्षु तिब्बत की ओर गए थे।

वाङ्मू कुछ वर्षों पहले वृद्ध प्रोफसर तान-शान के साथ भारत आया था। कुछ दिनों तक तो वह उन्हींके साथ रहा और हिंदी और अंग्रेज़ी भाषाओं का अध्ययन करता रहा, फिर प्रोफसर शान चीन लौट आए और वह यहीं बना रहा और किसी बौद्ध सोसाइटी से अनुदान प्राप्त कर सारनाथ में आकर बैठ गया। भावुक, काव्यमयी प्रकृति का जीव, जो प्राचीनता के मनमोहक वातावरण में विचरते रहना चाहता था। वह यहाँ तथ्यों की खोज करने नहीं आया था। वह तो बोधिसत्त्वों की मूर्तियों को देखकर गद्गद होने आया था। महीने-भर से संग्रहालयों के चक्कर काट रहा था, लेकिन उसने कभी नहीं बताया कि बौद्ध धर्म की किस शिक्षा से उसे सबसे अधिक प्रेरणा मिलती है। न तो वह किसी तथ्य को पाकर उत्साह से खिल उठता, न उसे कोई संशय परेशान करता। वह भक्त अधिक और जिज्ञासु कम था।



मुझे याद नहीं कि उसने साथ कभी खुलकर बात की हो, या किसी विषय पर अपना मत पेश किया हो। उन दिनों मेरे और मेरे दोस्तों के बीच घंटों बहसें चला करतीं, कभी देश की राजनीति के बारे में, कभी धर्म के बारे में, लेकिन वाङ्मू इनमें कभी भाग नहीं लेता था। वह सारा वक्त धीमे-धीमे मुस्कराता रहता और कमरे के एक कोने में दुबककर बैठा रहता। उन दिनों देश में बलवलों का सैलाब-सा उठ रहा था। स्वतंत्रता आंदोलन जोरों पर था और हमारे बीच उसीकी चर्चा रहती-कांग्रेस कौन-सी नीति अपनाएगी, आंदोलन कौन-सा रुख

पकड़ेगा। क्रियात्मक स्तर पर तो हम लोग कुछ करते-कराते नहीं थे, लेकिन भावनात्मक स्तर पर उसके साथ बहुत कुछ जुड़े हुए थे। इस पर वाङ्मय की तटस्थता कभी हमें अखरते लगती, तो कभी अचंभे में डाल देती। वह हमारे देश की ही गतिविधि के बारे में नहीं, अपने देश की गतिविधि में भी कोई विशेष दिलचस्पी नहीं लेता था। उसके अपने देश के बारे में भी पूछो, तो मुस्कराता सिर हिलाता रहता था।

कुछ दिनों से श्रीनगर की हवा भी बदली हुई थी। कुछ मास पहले यहाँ गोली चली थी। कश्मीर के लोग महाराजा के खिलाफ उठ खड़े हुए थे और अब कुछ दिनों से शहर में उत्तेजना पाई जाती थी। नेहरू जी श्रीनगर आनेवाले थे और उनका स्वागत करने के लिए नगर को दुल्हन की तरह सजाया जा रहा था। आज ही दोपहर को नेहरू जी श्रीनगर पहुँच रहे हैं। नदी के रास्ते नावों के जुलूस की शक्ल में उन्हें लाने की योजना थी और इसी कारण मैं वाङ्मय को खोजता हुआ उस ओर आ निकला था।

हम घर की ओर बढ़े जा रहे थे, जब सहसा वाङ्मय ठिठककर खड़ा हो गया।

"क्या मेरा जाना बहुत जरूरी है? जैसा तुम कहो..."

मुझे धक्का-सा लगा। ऐसे समय में, जब लाखों लोग नेहरू जी के स्वागत के लिए इकट्ठे हो रहे थे, वाङ्मय का यह कहना कि अगर वह साथ में न जाए तो, कैसा रहे, मुझे सचमुच बुरा लगा। लेकिन फिर स्वयं ही कुछ सोचकर उसने अपने आग्रह को दोहराया नहीं और हम घर की ओर साथ-साथ जाने लगे।

कुछ देर बाद हब्बाकदल के पुल के निकट लाखों की भीड़ में हम लोग खड़े थे---मैं वाङ्मय तथा मेरे दो-तीन मित्र। चारों ओर, जहाँ तक नजर जाती, लोग ही लोग थे---मकानों की छतों, पुल पर, नदी के ढलवाँ किनारों पर। मैं

बार-बार कनखियों के चेहरे की ओर देख रहा था कि उसकी क्या प्रतिक्रिया हुई है, कि हमारे दिल में उठने वाले वलवलों का उस पर क्या असर हुआ है। यों भी यह मेरी आदत-सी बन गई है, जब भी कोई विदेशी साथ में हो, मैं उसके चेहरे को पढ़ने की कोशिश करता रहता हूँ कि हमारे रीति-रिवाजों, हमारे जीवनयापन के बारे में उसकी क्या प्रतिक्रिया होती है। वाङ्मू अर्धमुँदी आँखों से सामने का दृश्य देखे जा रहा था। जिस समय नेहरू जी की नाव सामने आई, तो जैसे मकानों की छतें भी हिला-हिलाकर लोगों का अभिवादन कर रहे थे। और हवा में फूल ही फूल बिखर गए। मैंने पलटकर वाङ्मू के चेहरे की ओर देखा। वह पहले ही की तरह निश्चेष्ट-सा सामने का दृश्य देखे जा रहा था।

लेखक परिचय :

सन् 1915, अगस्त 7 को रावलपिंडी में भीष्म साहनी जी का जन्म हुआ। एम.ए, पीएच.डी. तक इन्होंने शिक्षा पायी है। साहनी जी हिंदी, अंग्रेज़ी, संस्कृत, रूसी, पंजाबी आदि भाषाओं के ज्ञाता हैं। इन भाषाओं की आपकी अनेक रचनाएँ प्रकट हुई हैं। विशेषकर आम आदमी का जीवन आपकी रचनाओं में अंकित है। झरोखे, कड़ियाँ, तमस, बसंती आदि उपन्यास हैं। भीष्म साहनी जी ने जीवनियाँ भी लिखी हैं, यथा 'भाई बालराज', 'अपनी बात'। कबीरा खड़ा बाज़ार में, माधवी, मुआवजे आदि नाटक हैं। आप शिरोमणि पुरस्कार, साहित्य अकादमी पुरस्कार, सोवियत लैंड नेहरू पुरस्कार इत्यादि से शोभित हैं। हाल ही में इनकी रचना 'कबीरा खड़ा बाजार में' पर आधारित संतेयल्लि निंता कबीर नामक प्रसिद्ध कन्नड सिनेमा बनी है।

शब्दार्थ :

धूसररंग - धूल जैसरंग, चोगा - एक ढीला ढाला अंगरखा, घुटा हुआ - मुँड़ा हुआ, सफेद - एक प्रकार का ऊँचा वृक्ष, चीवर - साधु-संतों का पहनावा, भिक्षु - बौद्ध सन्यासी, चिन - एक सदा बहार वृक्ष, मतवाला - मदमस्त, दीवाना; मृगशावक - हिरन का बच्चा, अस्फुट - अस्पष्ट, अतिसूक्ष्म; प्रवचन - उपदेशपूर्ण व्याख्यान, तथ - वास्तविकता, सत्यता; जिज्ञासु - इच्छुक, आकांक्षी; दुबककर - छिपकर, वलवला - शोर, जोश, उमंग; सैलाब-बाढ़, रूख-नज़रिया, दृष्टिकोण; उत्तेजना - क्रोध, भड़काव; कनखी - तिरछी नज़र, कनखियों से देखना - दूसरों की नज़र बचाकर देखना, निश्चेष्ट - स्थिर, गतिहीन।

टिप्पणी :

बोधिसत्त्व - वह जो बुद्धत्व प्राप्त करने का अधिकारी हो परंतु बुद्ध न हो सका हो; महात्मा बुद्ध के पूर्व जन्मों का सूचक नाम।

बुद्ध - जो जगा हुआ हो, ज्ञानवान ।

दसियों शताब्दी - दसवीं शताब्दी या उसके लगभग

ल्हासा - एक जगह का नाम

मौखिक प्रश्न :

I. निम्न प्रश्नों का उत्तर दीजिए :

१. वाङ्चू किस सड़क पर चलता आ रहा था?
२. वाङ्चू का चोगा किस रंग का था?
३. पहले स्तूप के नीचे क्या दिखाए जाते थे?
४. बौद्ध ग्रंथ किस रास्ते से तिब्बत भेजे गए थे?
५. उसके अपने देश के बारे में पूछने पर वाङ्चू क्या करता था?

II. लिखित प्रश्न :

१. वाङ्चू का सिर किसकी भाँति घुटा हुआ था?
२. वाङ्चू कहाँ से निकलकर चला आ रहा था?
३. लेखक ने चुटकी लेते हुए वाङ्चू से क्या पूछा?
४. वाङ्चू के हाथ का कंपन लेखक को कैसे पहुँचना था?
५. दो बजे तक लेखक तथा वाङ्चू को कहाँ पहुँचना था?
६. गंगा की धार को वाङ्चू किसके रूप में देखता?

III. तीन-चार वाक्यों में उत्तर लिखिए :

१. दूर से आता वाङ्चू लेखक को कैसे दिखाई दे रहा था?
२. लेखक वाङ्चू की मुस्कान के बारे में क्या कहते हैं?
३. वाङ्चू ने संग्रहालय के बारे में क्या बताया? उसके लिए बोलना क्यों असंभव हो गया?
४. 'वाङ्चू भक्त अधिक और जिज्ञासू कम था' - कैसे?
५. वाङ्चू की राजनैतिक जानकारी के बारे में लिखिए?
६. कुछ दिनों से श्रीनगर की हवा क्यों बदली थी?
७. नेहरूजी कहाँ खड़े होकर लोगों का अभिवादन कर रहे थे? उस समय वाङ्चू की प्रतिक्रिया कैसी थी?

IV. रिक्त स्थान भरिए :

१. पीछे _____ की ऊँची पहाड़ी थी।
२. वाङ्मू _____ के खंडहरों और संग्रहालयों में घूम रहा था।
३. वाङ्मू _____ हो उठा था कि उसका गला रुँध गया।
४. वाङ्मू अपने हाथ को लेखक की _____ पर रख दिया।
५. आरंभ में महाप्राण की _____ नहीं बनाई जाती थीं।
६. वाङ्मू कुछ वर्षों पहले प्रोफेसर _____ के साथ भारत आया था।

भाषा अध्ययन

I. वाक्य में प्रयोग कीजिए :

१. रोमांचकारी २. अतीत ३. गद्गद होना ४. मंत्रमुग्ध
५. दिलचस्पी

II. विलोम शब्द लिखिए :

- | | | | | | |
|----------------|---|----------|---|---------|---|
| १. धीरे - धीरे | × | ५. हल्का | × | ९. देशी | × |
| २. ऊँची | × | ६. अक्सर | × | | |
| ३. प्राचीन काल | × | ७. अधिक | × | | |
| ४. सचमुच | × | ८. निकट | × | | |

III. अन्य वचन रूप लिखिए :

- | | | | |
|-------------|-------------|--------------|-------------|
| १. नदी - | ५. मूर्ति - | ९. कल्पना - | १३. चेहरा - |
| २. भिक्षु - | ६. पैर - | १०. चोटी - | १४. दृश्य - |
| ३. कतार - | ७. यात्रा - | ११. रास्ता - | १५. मकान - |
| ४. पन्ना - | ८. पेड़ - | १२. देश - | |

योग्यता विस्तार :

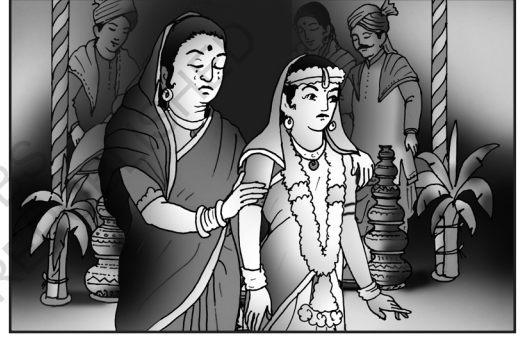
- 'महाप्राण' शब्द 'गौतम बुद्ध' के लिए प्रयुक्त है। गौतम बुद्ध के सामाजिक संदेशों के बारे में जानिए तथा कक्षा में चर्चा कीजिए ।





आशय : हमारी सामाजिक व्यवस्था में स्त्रियों के लिए आचरण संबंधी कई बंधन होते हैं। स्त्रियों की 'कोमलता' की आड़ में एक 'कमजोरी' का उपहास छिपा रहता है। इस कविता में स्त्री जीवन के प्रति कवि की यही संवेदन-शीलता की अभिव्यक्ति हुई है।

कितना प्रामाणिक था उसका दुख
लड़की को दान में देते वक्त
जैसे वही उसकी अंतिम पूँजी हो



लड़की अभी सयानी नहीं थी
अभी इतनी भोली सरल थी
कि उसे सुख का आभास होता था
लेकिन दुख बाँचना नहीं आता था
पाठिका थी वह धुंधले प्रकाश की
कुछ तुकों और लयबद्ध पंक्तियों की

माँ ने कहा पानी में झाँककर
अपने चेहरे पर मत रीझना
आग रोटियाँ सेंकने के लिए है
जलने के लिए नहीं
वस्त्र और आभूषण शाब्दिक भ्रमों की तरह
बंधन हैं स्त्री जीवन के

माँ ने कहा लड़की होना
पर लड़की जैसी दिखाई मत देना।

कवि परिचय :

कृत्तुराज जन्म सन १९४० में भरतपुर में हुआ। राजस्थान विश्वविधालय, जयपुर से उन्होंने अंग्रेजी में एम.ए. किया। चालीस वर्षों तक अंग्रेजी साहित्य के अध्ययन के बाद अब सेवानिवृत्ति लेकर जयपुर में रहते हैं। उनके अब तक आठ कविता-संग्रह प्रकाशित हो चुके हैं जिनमें एक मरणधर्म और अन्य, पुल पर पानी, सुरत निरत और लीला मुखारविंद प्रमुख हैं। उन्हें सोमदत्त, परिमल सम्मान, मीरा पुरस्कार, पहल सम्मान तथा बिहारी पुरस्कार मिल चुके हैं।

कवि की कविताओं में दैनिक जीवन के अनुभव का यथार्थ है और वे अपने आसपास रोजमर्रा में घटित होने वाले सामाजिक शोषण और विडंबनाओं पर निगाह डालते हैं। यही कारण है कि उनकी भाषा अपने परिवेश और लोक जीवन से जुड़ी हुई है।

शब्दार्थ :

पूँजी - धन, व्यवसाय में लगा धन, सयानी - बालिग, चतुर, चालाक;
आभास - अनुभूति, महसूस; बाँचना - पढ़ना, समझना; पाठिका - शिष्या,
पढ़नेवाली, सीखनेवाली; धुँधला - अस्पष्ट, तुक - लय, अंत्यानुप्रास;
लय - स्वर, धुन; रीझना - मोहित होना, भ्रम - वहम, संदेह, गलती;

अभ्यास

मौखिक प्रश्न :

I. निम्न प्रश्नों का उत्तर दीजिए :

१. 'कन्यादान' कविता के कवि कौन हैं?
२. कवि किसके प्रति संवेदनशील हैं?
३. कवि के प्रमुख कविता - संग्रहों के नाम बताइए ।

लिखित प्रश्न

II. एक वाक्य में उत्तर लिखिए :

१. माँ का दुख कब प्रामाणिक था?
२. लड़की का स्वभाव कैसा था?
३. लड़की क्या नहीं जानती थी?
४. माँ के अनुसार आग किसके लिए है?

III. तीन-चार वाक्यों में उत्तर लिखिए :

१. माँ का अपनी बेटी अंतिम पूँजी क्यों लग रही थी?
२. लड़की को क्यों भोली और सरल बताया गया है?
३. कविता में किन-किन चीज़ों को स्त्री जीवन का बंधन बताया गया है? और वह किस तरह का बंधन है?
४. माँ ने अपनी बेटी को सचेत करना क्यों ज़रूरी समझा?

IV. भाव स्पष्ट कीजिए :

१. आग रोटियाँ सेंकने के लिए है,
जलने के लिए नहीं ।
२. माँ ने कहा लड़की होना,
पर लड़की जैसी दिखाई मत देना।

भाषा अध्ययन

I. पर्यायवाची शब्द लिखिए :

- | | | | |
|--------------|---------|-----------|---------|
| १. प्रामाणिक | - | ५. चेहरा | - |
| २. वक्त | - | ६. वस्त्र | - |
| ३. प्रकाश | - | ७. आभूषण | - |
| ४. पानी | - | | |

II. वाक्य में प्रयोग कीजिए :

- | | | |
|----------|----------|---------|
| १. दान | २. पूँजी | ३. आभास |
| ४. रीझना | ५. जलना | ६. जीवन |

III. अन्य लिंग शब्द लिखिए :

- | | | | |
|----------|---|-----------|---|
| १. लड़की | - | ४. पाठिका | - |
| २. सयानी | - | ५. माँ | - |
| ३. भोली | - | ६. स्त्री | - |

IV. इस कविता में तुकवाले शब्द प्रयुक्त नहीं हैं। किसी भी अन्य कविता से पाँच तुकवाले शब्द चुनकर लिखिए ।

योग्यता विस्तार :

- माँ ने कहा 'लड़की होना पर लड़की जैसी दिखाई मत देना'। - इसके बारे में विचार कीजिए।
- कन्या के साथ दान की बात उचित है या अनुचित है - चर्चा कीजिए।
- 'मीना किश्वर कमाल' जी की यह कविता पढ़िए और समझिए:

मैं लौटूँगी नहीं

मैं एक जगी हुई स्त्री हूँ,

मैंने अपनी राह देख ली है,

अब मैं लौटूँगी नहीं।

मैंने ज्ञान के बंद दरवाज़े खोल दिए हैं,

सोने के गहने तोड़कर फेंक दिए हैं,

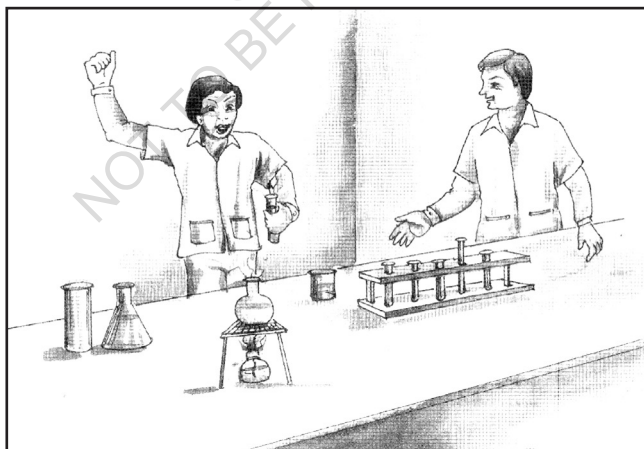
भाइयो! मैं अब वह नहीं हूँ जो पहले थी॥ मैं एक जगी हुई



- ममता कालिया

आशय : प्रस्तुत एकांकी समकालीन समय में खंड-खंड होते संबंधों पर एक करारी चोट करता है। एक ओर इसमें विज्ञान की प्रगति और शोध परिणामों का उज्ज्वल पक्ष प्रस्तुत किया गया है, दूसरी ओर जीवन-जगत की कठोर सच्चाइयाँ प्रस्तुत हैं। लेखिका ने फन्तासी शैली में एकांकी का आरंभ कर, उसे यथार्थवादी विश्लेषण से जोड़ा है।

(जिस समय मंच पर प्रकाश होता है, नौजवान वैज्ञानिक डॉ. कौशिक अपनी प्रयोगशाला में परीक्षण कर रहे हैं। उनके आस-पास माइक्रोस्कोप, परखनली, बीकर और जार नज़र आ रहे हैं। उनका सहयोगी अविनाश भी उसके साथ लगा हुआ है। एकाएक डॉ. कौशिक के चेहरे पर खुशी और उत्तेजना आती है।)



डॉ.कौशिक : युरेका! मैंने ढूँढ लिया। तुमने देखा अविनाश, कैसे वह मरा हुआ कॉक्रोच उस घोल को डालने से अभी-अभी जिन्दा होकर चल दिया !

अविनाश : (शंका से) शायद वह कॉक्रोच अभी पूरी तरह मरा नहीं था।

डॉ. कौशिक : (उसी जोश में) तुम्हें पता है उसे मरे हुए छः घंटे हो चुके थे ।

अविनाश : (माथे का पसीना पोंछते हुए) बड़ी बेढ़ब चीज़ है कॉक्रोच । आप उसे चप्पल से कुचल दें, संडसी से दबा दें, पहाड़ से गिरा दें, समुन्दर में डुबो दें, वह थोड़ी देर में साँस लेकर फिर चल देगा। इन बातों का कोई वैज्ञानिक आधार नहीं है ।

डॉ. कौशिक : तुम क्यों नहीं मानना चाहते कि मेरे हाथ वह नुस्खा आ गया है जिससे मरा हुआ जीव जी उठे । (डॉ. कौशिक खुश होकर कुर्सी से उठते हैं) हा, हा, हा, अब मैं जितना चाहूँ, यह सोल्यूशन बनाकर प्राणियों को नया जीवन दे सकता हूँ ।

अविनाश : (संदेह से) पर कौन चाहेगा आपका यह नुस्खा ?

डॉ. कौशिक : तुम पूछते हो कौन ? मैं कहता हूँ कौन नहीं चाहेगा अविनाश ! जिसके घर कोई मर जाता है, वहाँ कैसे टूट जाते हैं लोग, बिखर जाता है नीड़ । मैं पीड़ा से कराहती मानवता के लिए नये जीवन का संदेश लाऊँगा ।

अविनाश : (व्यंग्य से) आप मृत्यु को चुनौती देंगे, जीवन और मृत्यु तो चिर सत्य है ।

डॉ. कौशिक : जीवन है लेकिन मृत्यु नहीं, यह मैंने अपने इस कम्पाउंड से सिद्ध कर दिया है ।

(पास ही अखबार पड़ा है । डॉ. कौशिक उसे उठाकर पन्ने पलटते हैं और चौथा पृष्ठ खोलकर अविनाश के आगे रख देते हैं ।)

डॉ. कौशिक : यह देखो, कितने लोग हैं जिनके घर कोई न कोई मर जाता है, कोई बीमारी से, कोई दुर्घटना से, कोई यों ही । कितने लोगों को ये रोते-बिलखते छोड़ जाते हैं । इनके घरवालों द्वारा दिए शोक-समाचार पढ़ कलेजा मुँह को आता है, मैं इन सबके दुख दूर करूँगा ।

(अविनाश के चेहरे पर मंद, व्यंग्यपूर्ण मुस्कान है । डॉ. कौशिक अपनी बात खत्म कर मुड़ते हैं तो वह उनकी पीठ पीछे कन्धे उचका देता है ।)

(अगला दिन । घड़ी सुबह के नौ बजा रही है । डॉ. कौशिक के हाथ में अखबार है । चौथे पृष्ठ पर कई जगह वे निशान लगाते हैं । इन जगहों पर कोई न कोई मर गया है जिसके परिवार ने अखबार में शोकसमाचार प्रकाशित किया है । डॉ. कौशिक दवाओं का ब्रीफ़केस स्कूटर में रखते हैं । इस बीच अविनाश भी आ जाता है।)

डॉ. कौशिक : तो चलें ?

अविनाश : (बुझे स्वर में) चलिए, लेकिन ...

डॉ. कौशिक : आज सुहानी सुबह है और हम एक महान काम पर निकल रहे हैं, अविनाश । अपना यह लेकिन-वेकिन, यहीं घर में छोड़ चलो।

(दोनों स्कूटर पर जाते हैं, दो-चार मोड़ घूमने के बाद वे जिस कॉलोनी में आते हैं उसके साइन बोर्ड पर लिखा है भावनानगर। एक लंबी सड़क के अंतिम छोर पर वे एक ऐसे मकान पर रुकते हैं जहाँ काफी भीड़ लगी है। सभी के चेहरे शोकमग्न हैं। लोग मृतक के गुणों का बखान करते हुए उसकी मृत्यु पर अफ़सोस प्रकट कर रहे हैं।)

पहला बेटा : हाय! जब तक पिताजी थे, मुझे घर की कोई फ़िक्र नहीं थी। महीने में बीस-बीस दिन मैं दौरे पर रहता था, उन्हींके भरोसे।

दूसरा बेटा : पिताजी तो महापुरुष थे। मैं इतना बड़ा हो गया फिर भी मुझे बच्चा मानते। अभी पिछले साल यह घड़ी उन्होंने मेरी सालगिरह पर दी थी।

एक बहू : हाय ! मैंने उन्हें पिताजी से बढ़कर समझा। मैं तो उन्हें नाश्ते में दो अंडे देती थी।

दूसरी बहू : हाय ! वे मनुष्य नहीं देवता थे। उनके बिना हम कैसे जियेंगे ?

(डॉ. कौशिक मृतक के बेटों को एक तरफ़ ले जाकर बड़ी उमंग से अपनी खोज के बारे में बताते हैं।)

डॉ. कौशिक : यकीन मानिए, मैंने ऐसा फॉर्मूला ढूँढ़ निकाला है कि मैं आपके पूज्य पिताजी को जीवित कर सकता हूँ।

(दोनों बेटे एक हक्के-बक्के अंदाज में एक-दूसरे को ताकते खड़े हो जाते हैं। कभी वे डॉ. कौशिक को देखते हैं, कभी एक दूसरे को। तभी उनकी पत्नियाँ भी आ जाती हैं।)

दोनों पत्नियाँ

एक साथ : क्यों जी ऐसे क्यों खड़े हो, सारा काम पड़ा है।

दोनों बेटे : ये कहते हैं ...

पत्नियाँ : (सशंकित) क्या कहते हैं ?

डॉ. कौशिक : मुझसे आप लोगों का दुख देखा नहीं जा रहा है । आज सुबह ही अखबार में मैंने यह शोकसमाचार पढ़ा जो आपने दिया था। हाल ही में मैंने एक फॉर्मूला ढूँढ निकाला है जिससे पिताजी को नई जिंदगी मिल सकती है ।

एक पत्नी : ना बाबा, जाने क्या कीमत माँग बैठें आप !

डॉ. कौशिक : इसके बदले मैं आपसे कौड़ी भी न लूँगा । इसकी कामयाबी ही इसकी कीमत है ।

पहला बेटा : (कुछ दबे स्वर में अपने भाई से) पिताजी का वसीयतनामा देख लिया । कोई कसर तो नहीं है उसमें ?

दूसरा बेटा : (सन्तुष्ट आवाज़) वह मैंने पहले ही देख लिया है, वसीयतनामा दुरुस्त है ।

पहला बेटा : लेन-देन निपटा गये हैं ?

दूसरा बेटा : (तसल्ली से) सब निपटा गये हैं ।

पहला बेटा : फिर क्या ...

(दोनों लड़के डॉ. कौशिक की तरफ मुखातिब होते हैं । उनकी पत्नियाँ उग्र विरोध से डॉ. कौशिक को देख रही हैं ।)

पहला बेटा : ऐसा है डॉक्टर साहब, आपकी बात मान कर हमें बड़ा हर्ष होता लेकिन आप जानते हैं, बड़ा नाजुक मामला है। दोनों छोटे भाई विदेश में हैं, उन्हें केबिल किया हुआ है। वे आकर कितना बिगड़ेंगे। उनके हजारों डॉलर मिट्टी में मिल जायेंगे।

दूसरा बेटा : (बनावटी लहजा) आप भी साहब अजीब हैं, इधर हमें सारा इंतज़ाम करना है, देर हो रही है, उधर आप एक नया शगूफ़ा लेकर आ गये हैं।

(तभी सोलह साल का एक लड़का बाहर से आकर उत्तेजित आवाज़ में कहता है।)

छोटू : पापा, पापा गेंदे के फूल ले आया हूँ। फूलवाले को दो सौ रुपये दे दीजिए।

(एक ट्रक आकर घर के सामने खड़ी होती है। उसमें से घर का एक सदस्य अंदर आता है।)

किशन : सुरेश, बड़े मुश्किल से ट्रक का इन्तज़ाम किया है। इस काम के लिए कोई गाड़ी देता ही न था। सारी ट्रकें आजकल छात्रों ने चुनाव में रोक रखी हैं। बड़ी मेहनत के बाद यह ग्यारह सौ पर मिली है। आधा पैसा एडवांस दिया, तब कहीं आयी है ट्रक।

एक अन्य आदमी : (बाहर से आकर) आपने आज अखबार में किराये पर कमरा देने का जो इश्तेहार दिया है, उसी सिलसिले में आया हूँ।

(दोनों भाई कौशिक की ओर और फिर समस्त इंतज़ाम की ओर उलझन भरी नज़र डालते हैं । क्या करें जैसी भंगिमा बना कर सिर पर हाथ रख लेते हैं । तभी कुछ और मेहमान अंदर घुसते हैं और एक बार फिर हाय पिताजी हाय पिताजी, विलाप शुरू हो जाता है। बड़ा लड़का हाथ जोड़कर डॉ. कौशिक को स्कूटर तक पहुँचा आता है ।)

बड़ा बेटा : जो हम पर पड़ी है, भुगत लेंगे डॉक्टर साहब । आप क्यों पड़े इस चक्कर में । नमस्ते ।

(लड़का तेजी से वापस कमरे में चला आता है । डॉ. कौशिक अबूझ से उसी दिशा में देखते रहते हैं । अविनाश उनके कंधे पर ऐसे स्पर्श करता है जैसे दरवाज़ा खटखटा रहा हो।)

अविनाश : अब कहाँ जाना है, बताइए, देर हो रही है ।

(डॉ. कौशिक अखबार देखकर स्कूटर स्टार्ट करते हैं । काफी दूर चलने के बाद, मकानों के नंबर पढते-पढते वे सही पते पर पहुँचते हैं । मकान के अंदर-बाहर सफ़ेद कपड़ों में बहुत से स्त्री-पुरुष नज़र आते हैं । बरामदे में मृत औरत का शव ले जाने की तैयारी है । घर की बहू अपनी बाँह पर तीन-चार भारी, जरी की साड़ियाँ लिए खड़ी है और बड़ी बूढ़ियों में सलाह चल रही है, कौन-सी साड़ी मृतका पर चढ़ाई जाए । अंत में सबकी सलाह पर एक हल्की पुरानी जरीदार साड़ी से शव ढाँप दिया जाता है।)

(शव के पैरों के पास एक नवयुवक गमगीन बैठा है ।

डॉ. कौशिक उसे अलग आने का इशारा करते हैं । डॉ. कौशिक फुर्ती से ब्रीफकेस खोल कर शीशी उस नवयुवक को दिखाते हैं और हावभाव से बताते हैं कि वे क्या कर सकते हैं । नवयुवक के चेहरे पर आह्लाद उत्तेजना और विश्वास के चिह्न आते हैं । वह तुरंत पत्नी को आवाज़ देता है गिरिजा, गिरिजा सुनो तो।)

(गिरिजा के हाथ पर अभी भी साड़ियाँ लटकी हैं । आकर वह प्रश्नवाचक निगाह से दोनों को देखती है ।)

(नवयुवक जल्दी-जल्दी उसे समझाता है।)

नवयुवक : अम्मा फिर से जी सकती हैं, ये डॉक्टर साहब का कहना है, इनके पास ऐसी दवाई

(गिरिजा सीधे डॉ. कौशिक को कुछ ऐसी आक्रामकता से देखती है कि वे दो कदम पीछे हट जाते हैं । फिर गिरिजा एक गहरी चिढ़ से अपने पति की ओर देखती है । वह सहम कर वहाँ से हट जाता है । गिरिजा के होंठ निर्णायक वक्रता ले लेते हैं । अब वह बोलती है, एक ठंडी, निश्चयात्मक आवाज़ जिसमें आँसू का कोई गीलापन नहीं है ।

गिरिजा : (कटखनेपन से) क्या आपको पता है माँ जी किस जानलेवा बीमारी से तड़प-तड़पकर गुज़री हैं । आज पाँच साल बाद वह पहली बार चैन से सो रही हैं । नहीं तो इन सालों में सारी-सारी रात ख़ाँस-ख़ाँस कर इन्होंने अपना और मेरा जीना हराम किए रखा । इतने साल सोते-जागते,

आठों पहर इनकी सेवा आखिर किसने की ? मैंने ! घर के सब लोग किसी न किसी बहाने भागते रहे, कभी दफ़्तर, कभी कॉलेज, कभी बाज़ार । एक मैं ही थी जो इस पिछवाड़े के कमरे में घुटी रही तीमारदारी के लिए । बाकी बहुएँ तो अभी आयेंगी, एकाध घंटे हाय-हाय करेंगी और उनके बक्से टटोलने में लग जायेंगी । मैं ही हूँ जो सारी जिम्मेदारी निभाती हूँ । माँ जी को आप जीवन देने आये हैं या मुझे मौत !

(नवयुवक एक क्षण बड़ी हताशा से अपनी पत्नी की ओर देखता है, फिर डॉ. कौशिक को ठेलता हुआ सा बाहर ले जाता है । स्कूटर के पास अविनाश खड़ी है जो शक्ल से ही डॉ. कौशिक की निराशा समझ जाता है ।)

नवयुवक : जाने दीजिए डॉक्टर साहब । मेरी बीबी बड़ी लड़की है, इससे नहीं भिड़ें। तभी अच्छा है ।

(नवयुवक अंदर चला जाता है । डॉ. कौशिक पस्ती से अपना ब्रीफकेस स्कूटर की टोकरी में डालता है । अविनाश तसल्ली देने के लिए डॉक्टर का कंधा थपथपाता है।)

अविनाश : आपने तीसरा निशान लगाया है मुहब्बतनगर पर । यह बी-उनतीस में चलते हैं ।

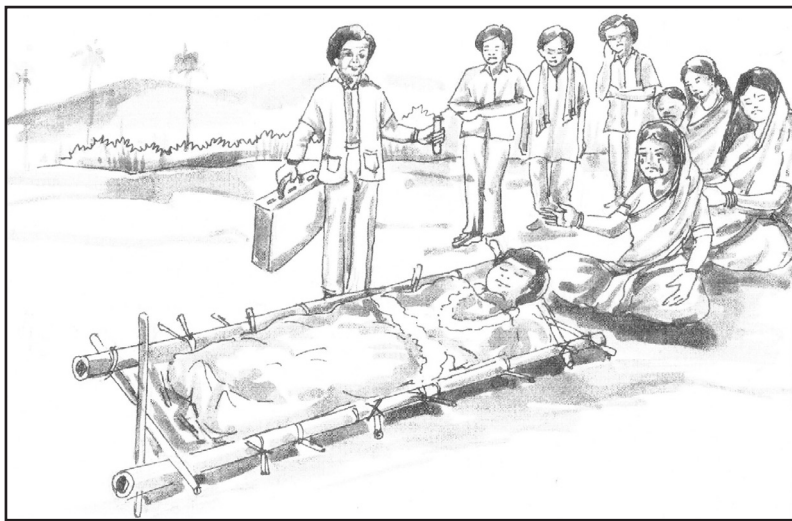
(स्कूटर चल देता है । कई मोड़ मुड़कर साइन बोर्ड दिखता है 'मुहब्बतनगर। स्कूटर बी-29 के आगे खड़ा होता

है । फ्लैट के बाहर बड़ा मनहूस-सा सन्नाटा है । तीन-चार लोग एक जीप को चारों ओर सफेद कपड़े से ढँक रहे हैं । हिम्मत कर डॉ. कौशिक मकान के अंदर दाखिल होते हैं । कमरे में सफेद वस्त्रों में पंद्रह-बीस स्त्रियाँ बैठी हैं । उनके बीच एक नवयुवती एकदम काले वस्त्रों में सिर झुकाए सिसक रही है । उसने आँखों पर आँचल रखा हुआ है । कमरे की दीवार पर मृतक की फोटो लटकी है जिस पर फूलों का हार चढ़ाया हुआ है। हृदय-विदारक दृश्य ।)

डॉ. कौशिक : मैं कैप्टन शर्मा की विधवा से बात करना चाहता हूँ । (नवयुवती होश करती है । धीरे-धीरे भीड़ से उठकर डॉ. कौशिक की तरफ आती है । बहुत रो लेने के बाद उसकी आँखें बड़ी उदास और भीगी लग रही हैं ।)

डॉ. कौशिक : मैंने आज सुबह अखबार में आप द्वारा दिया शोक समाचार पढ़ा तो मैं हिल उठा। मैं आपके लिए जीवन का नया संदेश लाया हूँ। आप इस खुशखबरी को पाकर झूम उठेंगी ।

(नवयुवती प्रश्नवाचक दृष्टि से डॉ. कौशिक को देखती है । एक जिज्ञासु औरत अगरबत्तियाँ जलाने के बहाने उन दोनों की तरफ आ गई है । नवयुवती उसकी ओर सतर्कता से देखती है ।)



नवयुवती : कमला जाओ साहब के लिए पानी लाओ ।

डॉ. कौशिक : धन्यवाद ! क्या आप दोनों में बेहद प्रेम था ?

नवयुवती : (आँखें मूँदकर) बेहद ! अगर उन्हें कहीं बाहर जाना पड़ता था तो मिनट-मिनट पर फोन कर मेरा हाल पूछते थे । और तो और मुझे गुसलखाने में भी देर लग जाये तो वे गवारा नहीं करते थे।

डॉ. कौशिक : कैसे हुआ यह सर्वनाश !

नवयुवती : एयरक्रैश !

डॉ. कौशिक : ओफ !

(एक क्षण सन्नाटा ! फिर अपनी आवाज़ में सायास उत्साह भर डॉ. कौशिक कहते हैं ।)

डॉ. कौशिक : लेकिन अब आपको अपना जीवन अकेले नहीं गुज़ारना पड़ेगा । मैं आप के पति को फिर से जीवन दे सकता हूँ इसीलिए आया हूँ ।

(नवयुवती का चेहरा कुछ विकृत हो जाता है । सख्त आकृति)

नवयुवती : किस तरह ?

डॉ. कौशिक : मैंने एक ऐसा मिक्सचर तैयार किया है जिससे मरा हुआ इन्सान जी सकता है ।

नवयुवती : (कठिन स्वर से) और मैं समझे बैठी थी कि आप बीमा कंपनी से आये हैं । चले जाइये यहाँ से ! आप सोचते हैं मैं आप धूर्त लोगों से, अपने शेखर की पवित्र काया दूषित करवाऊँगी !

(नवयुवती की तीखी आवाज़ और तमतमाए चेहरे से सहम कर डॉ. कौशिक बाहर को भागता है । हड़बडी में ब्रीफकेस भूलने लगता है, उसे लेने मुड़ता है । नवयुवती फिर घुड़कती है, 'गए नहीं आप?')

डॉ. कौशिक : जाता हूँ, जाता हूँ ।

(बाहर आकर डॉ. कौशिक माथे से पसीना पोंछता है । अविनाश हमदर्दी से उसकी ओर देखता है ।)

अविनाश : छोड़िए डॉक्टर ! आप भी किन तिलों में तेल तलाश रहे हैं । पैसे से बड़ा महबूब नहीं ।

डॉ. कौशिक : जिंदगी जिंदाबाद । एक पता बाकी है, चलेंगे । क्या पता वहाँ कोई हो, जिसे सचमुच कोई जान से प्यारा हो ।

(स्कूटर चल पड़ता है । जल्द ही एक साईन बोर्ड दिखता

है इबादतनगर । बस्ती में एक मकान के बरामदे में छोटी सी भीड़। बड़ी कमसिन नववधू मर गई है । उसका पति अपने सीने पर हाथ मार-मार कर विलाप कर रहा है ।)

पति : हाय कम्मो ! तू कहाँ चली गई ? तुझे क्या हो गया कम्मो ?
(कई बुजुर्ग और हम उम्र लोग उसे दिलासा दे रहे हैं।)
(मृत बहू की सास रोती है- हाय मेरी सोने सी बहू कहाँ चली गई?)

(डॉ. कौशिक सहानुभूति से युवा विधुर के कंधे पर हाथ रखकर उसे अंदर कमरे में आने का इशारा करते हैं ।)

डॉ. कौशिक : आपका दुःख वाकई बहुत बड़ा है । मैं आपकी पत्नी को नया जीवन देने आया हूँ।

(प्रस्ताव सुनते-सुनते कम्मो के पति की भंगिमा बदलती जा रही है । उसके चेहरे पर आश्चर्य, चिढ़ और अविश्वास के भाव बड़ी तेजी से आ रहे हैं । अन्त में वह बड़ी दार्शनिक आकृति बना लेता है ।)

पति : डॉ. साहब आप किस कम्मो को लौटाने की बात कर रहे हैं ? वह हाड़-मांस की काया ? वह तो मिट्टी है मिट्टी। अगर कम्मो उस जज़्बात का नाम है जो मेरे रग-रग में समाया है तो वह कहाँ है डॉक्टर साहब, देखिए वह यहाँ है, वहाँ है, घर के कोने-कोने में है ।

‘इक तेरी दीद छिन गई मुझसे

वरना दुनिया में क्या नहीं बाकी !’

(कहते-कहते कम्मों का पति पास पड़े अखबार से अपना मुँह ढाँप लेता है । अखबार में विज्ञापनोंवाला पृष्ठ ऊपर है । वैवाहिक विज्ञापनोंवाले पन्ने पर कम्मो के पति ने जगह-जगह लाल निशान लगा रखे हैं । डॉ. कौशिक ध्यान से उन निशानों को देखते हैं और धीरे से बाहर को चल देते हैं । बाहर अविनाश खड़ा है । वे दोनों एक-दूसरे को देखते हैं । डॉ. कौशिक उसका कंधा दबाते हैं ।)

डॉ. कौशिक : तुम ठीक कहते थे, मैं ही गलत था ।

अविनाश : मौत ज़ालिम है, मगर ज़िन्दगी के कायदे उससे भी ज़्यादा ज़ालिम !

(स्कूटर पर सवार दोनों व्यक्तियों का अक्स धीरे-धीरे धुँधला पड़ता जाता है ।)

एकांकीकार का परिचय :

श्रीमती ममता कालिया का जन्म सन् 1940 ई. में मथुरा में हुआ। आप-को लेखन संस्कार अपने पिता से मिला था। आपके एकांकी, दूरदर्शन और आकाशवाणी के माध्यम से निरंतर देखे व साराहे गये हैं। आपके एकांकियों में 'आप न बदलेंगे', 'आपकी छोटी लड़की', 'आत्मा अठन्नी का नाम है', यहाँ रोना मना है उल्लेखनीय हैं। इनके अलावा 'बेघर', 'नरक दर नरक' (उपन्यास), 'छुटकारा', 'सीट नं छह', 'एक अदद औरत' (कहानियाँ) मौलिकता और इन्मुक्तता के कारण बहुचर्चित रहे हैं। आप लगभग तीस वर्ष इलाहाबाद के डिग्री कॉलेज में प्राचार्या रहीं। संप्रति वर्धा की अंग्रेज़ी त्रैमासिक पत्रिका Hindi (हिंदी) का संपादन कर रही हैं।

शब्दार्थ :

युरेका (यूनानी शब्द) - मैंने ढूँढ़ लिया, निर्जीव - मृत, संडसी - लोहे की छड़ी से बना कैचीनुमा औज़ार जो पकड़ने के काम आता है, नुस्खा - डॉक्टर या हकीम द्वारा कागज पर लिखा दवाइयों का विवरण, सिद्ध - प्रामाणित, कामयाबी - सफलता, इश्तेहार - विज्ञापन, शगूफा - विलक्षण घटना, वसीयतनामा - मृत्यु के पहले व्यक्ति द्वारा अपनी संपत्ति का विभाजन पत्र, जज़बात - भावना, महबूब - प्रेमी, दीद - देखती हुई आँखें, ज़ालिम - क्रूर, घोल-मिश्रण, बेढ़ब-उल्टा स्वभाववाला, उचकाना-उठाना।

मुहावरे :

नीड़ बिखर जाना - परिवार नष्ट हो जाना, कौड़ी भी न लेना - बदले में कुछ न लेना, तिलों में तेल तलाशना - व्यर्थ परिश्रम करना, कलेजा मुँह को आना - अत्यधिक कष्ट पहुँचना, चक्कर मारना - भटकना, चैन से सोना - शांति से सोना, हाय हाय करना - हाहाकार करना

मौखिक प्रश्न :

I. निम्न प्रश्नों का उत्तर दीजिए :

१. 'जान से प्यारे' एकांकी के रचयिता कौन हैं ?
२. युरेका शब्द का अर्थ क्या है ?
३. डॉ. कौशिक अपने संशोधन की परीक्षा किस पर आजमाते हैं ?
४. डॉ. कौशिक नगरवासियों की सहायता करने किसके संग जाते हैं ?
५. डॉ. कौशिक अंत में किस निर्णय पर पहुँचते हैं ?

लिखित प्रश्न :

II. एक वाक्य में उत्तर लिखिए :

१. डॉ. कौशिक के सहयोगी का नाम क्या था ?
२. अपने परीक्षण में सफल होते ही, डॉ. कौशिक के मुँह से निकला पहला उद्गार शब्द क्या था ?
३. किसी के घर में लोग कब टूट जाते हैं ?
४. भावनानगर के मृत व्यक्ति का कौन सा संबंधी अक्सर दौरे पर रहता था ?
५. मृत व्यक्ति को 'मनुष्य नहीं देवता थे' - बतानेवाली कौन थी ?
६. नवयुवक पति डॉ. कौशिक को हटाने के लिए पत्नी पर क्या आरोप लगाता है ?
७. डॉ. कौशिक मुहब्बतनगर में किसकी जान बचाने जाते हैं ?
८. 'वह ता मिट्टी' - यह उद्गार किसका है ?

II. तीन-चार वाक्यों में उत्तर दीजिए:

1. संशोधित सोल्यूशन के संबंध में डॉ. कौशिक और अविनाश के बीच आपस में क्या बातचीत होती है ?
2. भावनानगर के मृत व्यक्ति और उनके संबंधियों का परिचय दीजिए ।
3. गिरिजा अपनी मरी सास को जीवित करने से आपत्ति क्यों करती है ?
4. मुहब्बतनगर में कैप्टन शर्मा की मौत कैसे हुई थी ? उसकी पत्नी डॉ. कौशिक की कोशिश को असफल क्यों बनाती है ?

भाषा अभ्यास

I. निम्नलिखित वाक्यों में क्रिया को रेखांकित कर काल बताइए :

उदाहरण : तुम पूछते हो कौन ? मैं कहता हूँ कौन नहीं चाहेगा अविनाश !

पूछते हो - वर्तमान काल

कहता हूँ - वर्तमान काल

चाहेगा - भविष्यत्काल

- 1) आप मृत्यु को चुनौती देंगे, जीवन और मृत्यु तो चिर सत्य है ।
- 2) जीवन है लेकिन मृत्यु नहीं, यह मैंने अपने इस कम्पाउंड से सिद्ध कर दिया है ।
- 3) इनके घरवालों द्वारा दिए शोक समाचार पढ़ कलेजा मुंह को आता है, मैं इन सबके दुःख दूर करूँगा ।
- 4) वह मैंने पहले ही देख लिया है, वसीयतनामा दुरुस्त है ।
- 5) मैं आपके पति को फिर से जीवन दे सकता हूँ, इसीलिए आया हूँ ।

- ६) मैंने एक ऐसा मिक्सचर तैयार किया है, जिससे मरा हुआ इन्सान जी सकता है ।
- ७) आप सोचते हैं मैं आप धूर्त लोगों से अपने शेखर की पवित्र काया दूषित करवाऊँगी !
- ८) अगर कम्मो उस जज़्बात का नाम है जो मेरे रग-रग में समाया है तो वह कहाँ है, डॉक्टर साहब ।
- ९) एक पता बाकी है, चलेंगे ।
- १०) तुम ठीक कहते थे, मैं ही गलत था ।

II. पूर्वकालिक कृदन्त प्रत्यय 'कर' उचित धातु के साथ लगाकर रिक्त स्थान भरिए :

उदाहरण : वह थोड़ी देर में साँस लेकर फिर चल देगा ।

(इस वाक्य में 'ले' क्रिया का मूल रूप है । इसके साथ 'कर' जोड़ने से वही पूर्वकालिक कृदन्त बनता है जो प्रायः क्रिया विशेषण के अर्थ में प्रयुक्त होता है ।)

धातु (क्रिया का मूल रूप): ले, पा, खाँस-खाँस, आ, खोल, तड़प-तड़प

१. माँ जी जानलेवा बीमारी से गुज़री हैं ।
२. आप इस खुशखबरी को झूम उठेंगी ।
३. वे कितना बिगड़ेंगे ।
४. उधर आप एक नया शगूफा..... आ गए हैं ।
५. कौशिक फुर्ती से ब्रीफ़केस शीशी उस नवयुवक को दिखाते हैं ।
६. नहीं तो इन सालों में सारी सारी रात इन्होंने अपना और मेरा जीवन हराम किया रखा ।

III. इन अंग्रेजी शब्दों की अंग्रेजी वर्तनी लिखिए :

जैसे : माइक्रोस्कोप -

१. बीकर -	१०. स्कूटर -	१९. डॉलर -
२. जार -	११. कॉलोनी -	२०. ट्रक -
३. कॉक्रोच -	१२. साइन बोर्ड -	२१. एडवांस -
४. सोल्यूशन -	१३. फार्मूला -	२२. नंबर -
५. कंपाउंड -	१४. डॉक्टर -	२३. कॉलेज -
६. ब्रीफकेस -	१५. केबिल -	२४. फ्लैट -
७. जीप -	१६. फोटो -	२५. कैप्टन -
८. मिनट -	१७. एयरक्रैश -	२६. कंपनी -
९. फोन -	१८. मिक्सचर -	

योग्यता विस्तार

- आम समाज में नित्य देखे जानेवाले जीवन के ऐसे यथार्थ प्रसंगों पर चर्चा कीजिए जिससे जीवन के सत्य से आप अवगत हो जाएं।
- मौत जालिम है, मगर जिंदगी के कायदे उससे भी ज़्यादा ज़ालिम - उक्ति का आशय स्पष्ट कीजिए ।

नागरिकों के मूल अधिकार



- संकलित

आशय : भारत एक गणतंत्र राष्ट्र है। इस देश में राज्य शासन चलाने और देशवासियों के रहन-सहन के लिए संविधान में अनेक बातें लिखी गई हैं। हमारे देश के संविधान में लिखा गया है कि सबके साथ न्याय होगा, सब समान माने जाएंगे, सब के समान अधिकार होंगे और उसकी रक्षा का भार सरकार पर होगा। संविधान में नागरिकों के मूल अधिकार के रूप में समता, स्वतंत्रता, धर्म-स्वातंत्र्य, संस्कृति और शिक्षा, संपत्ति, हकों की रक्षा आदि अधिकार प्रदान किए हैं, जिनके कारण मनुष्य अपना जीवन चैन से जी पाएगा।

हमारा भारत देश एक गणतंत्र देश है। जिस देश का राज्य उसी देश की जनता के द्वारा चलता है और जहाँ कोई राजा नहीं होता, उसे गणतंत्र राज्य कहते हैं। हमारे देश के संविधान में लिखा गया है कि हमारे गणतंत्र देश में सबके साथ न्याय होगा। लोग किसी भी धर्म या मज़हब के माननेवाले हों, सब समान माने जाएंगे, सबके समान अधिकार होंगे और सबकी रक्षा का भार सरकार पर होगा।

हमारे संविधान में देश के सभी नागरिकों को कुछ अधिकार दिये गये हैं। इन अधिकारों को मूल अधिकार कहते हैं। ये अधिकार निम्नलिखित हैं -

समता का अधिकार-मूल अधिकारों में सबसे पहला अधिकार समता का अधिकार है, जिसमें लिखा गया है कि भारत के सब नागरिकों को क़ानून के सामने बराबर समझा जाएगा। कोई क़ानून ऐसा नहीं बनाया जाएगा जिससे उनके साथ भेदभाव प्रकट हो। आदमी चाहे किसी जाति या धर्म

का हो, चाहे वह कहीं भी पैदा हुआ हो-सबके अधिकार समान होंगे । इसी प्रकार स्त्री और पुरुष दोनों को बराबर समझा जाएगा ।

पहले भारत में जाति-पाँति और छूआ-छूत का जोर था । होटलों, दूकानों आदि में सब लोग नहीं जा सकते थे । अब संविधान में इस छूआ-छूत की मनाही कर दी गयी है । सबको समान अधिकार है कि वे किसी दुकान या होटल में जा सकते हैं और किसी भी नदी, तालाब या सड़क का उपयोग कर सकते हैं ।

संविधान में यह भी लिखा गया है कि सरकारी नौकरियों में भी सब नागरिकों को समान अवसर दिया जाएगा । मतलब यह कि आदमी किसी भी जाति या धर्म का माननेवाला हो, उसे उसकी योग्यता के अनुसार कोई भी सरकारी नौकरी पाने का अधिकार होगा । किसी पद के लिए स्त्री को अयोग्य नहीं समझा जाएगा । वे भी बड़े से बड़े पद पर नियुक्त हो सकती हैं ।

स्वतंत्रता का अधिकार - समता के अधिकार के बाद भारत के लोगों को स्वतंत्रता का अधिकार भी दिया गया है । भारत के सभी नागरिकों को भाषण देने की स्वतंत्रता है, लेखन की स्वतंत्रता है, सभा-संस्थाएँ बनाने की स्वतंत्रता है । इतना ही नहीं, उन्हें भारत में कहीं भी जाकर व्यापार या नौकरी करने की भी पूरी स्वतंत्रता है । किसी नागरिक को बिना कारण क़ैद भी नहीं किया जा सकता । यदि किसी को क़ैद किया गया, तो सरकार को इसके लिए सफ़ाई देनी होगी । यदि सरकार की सफ़ाई ठीक नहीं हुई, तो न्यायालय उस क़ैदी को रिहा कर सकता है ।

पहले भारत में सरकारी अफसर और बड़े-बड़े आदमी गरीब लोगों से मुफ्त में काम लेते थे । उसे बेगार कहते थे । संविधान में बेगारी को बिलकुल बंद कर दिया गया है । अब कोई भी आदमी किसी से मुफ्त में काम नहीं ले सकता । कोई किसी से जबरदस्ती उसकी इच्छा के विरुद्ध काम नहीं ले सकता । जो ऐसा करेगा वह सज़ा पाएगा ।

पहले कुछ मिल-मालिक छोटे बच्चों से कारखानों और खानों में काम लेते थे । इससे बच्चों का स्वास्थ्य बिगड़ जाता था और वे कमज़ोर हो जाते थे । उन्हें शिक्षा भी नहीं मिल पाती थी । इसलिए अब संविधान में यह नियम बना दिया गया है कि 14 वर्ष से कम आयु वाले किसी बच्चे को किसी कारखाने या खान में नौकर नहीं रखा जाएगा ।



धर्म-स्वातंत्र्य का अधिकार - संविधान में अपना धर्म मानने का, उस पर अमल करने का तथा उसका प्रचार करने का सब को अधिकार दिया गया है । हमारा देश ऐसा देश है जो धर्म के आधार पर नहीं बना है । इसलिए इसे 'धर्म-निरपेक्ष देश' कहा जाता है । यह देश किसी धर्म के साथ पक्षपात नहीं करता । यह भी नियम है कि किसी सरकारी स्कूल में किसी एक विशेष धर्म की शिक्षा नहीं दी जाएगी ।

संस्कृति और शिक्षा का अधिकार - हमारे संविधान में सब लोगों को अपनी भाषा, लिपि, या संस्कृति बनाये रखने का पूरा अधिकार दिया गया है। सब धर्मों के लोगों को अपनी रुचि के अनुसार धार्मिक संस्थाएँ बनाने और शिक्षा-संस्थाएँ स्थापित करने का समान अधिकार दिया गया है। सरकार इस तरह के कामों में कभी रुकावट नहीं डाल सकती।

संपत्ति का अधिकार - भारत के सभी नागरिकों को देश के किसी भाग में जाकर रहने, घर बनाने तथा संपत्ति उपार्जन करने का अधिकार दिया गया है। संविधान में यह भी नियम रखा गया है कि सरकार किसी आदमी की संपत्ति, जमीन या कंपनी नहीं ले सकती और यदि सार्वजनिक हित के लिए उसका लेना जरूरी हो, तो उसका उचित मूल्य देकर ही ले सकती है।

हकों की रक्षा का अधिकार - अब आपने पढ़ लिया कि भारत के प्रत्येक नागरिक को संविधान में क्या-क्या अधिकार दिये गये हैं। लेकिन केवल किसी को अधिकार दे देने मात्र से काम नहीं चलता। उन अधिकारों की रक्षा का भी प्रबंध होना चाहिए। इसीलिए हमारे संविधान में इन अधिकारों की रक्षा का भार देश के उच्चतम न्यायालय को सौंपा गया है। यह न्यायालय सरकार की गलती को पकड़ सकता है। यह सरकार के कामों से जनता की रक्षा कर सकता है।

अगर सरकार इन मूल अधिकारों में कमी करने का कोई कानून बनाए, तो अदालत कह सकती है कि यह कानून संविधान के खिलाफ़ है। तब ऐसा कानून रद्द समझा जाएगा। कोई भी आदमी उस अदालत में अपने मूल अधिकारों की रक्षा के लिए फ़रियाद कर सकता है। इस उच्चतम न्यायालय का निर्णय भारत की सभी अदालतों को मानना पड़ेगा और सरकार को भी उसे मानना

पड़ेगा । इसलिए यह अदालत जनता के अधिकारों की रक्षक और पहरेदार है ।

ये मूल अधिकार जनता की पवित्र निधि हैं । इनकी रक्षा हमें सब तरह से करनी चाहिए । जो अपने अधिकारों को समझता है और देश के प्रति अपने कर्तव्यों का पालन करता है, वही सच्चा नागरिक है । इसलिए हम सब लोगों को भारत का सच्चा नागरिक बनने का प्रयत्न करना चाहिए ।

शब्दार्थ :

कैद-अवरोध, बंधन; खान-वह स्थान, जहाँ से धातु, पत्थर खोद निकाले जाते हैं, धर्म-निरपेक्ष - जो किसी एक धर्म पर निर्भर न हो, संविधान - कानून के रूप में तैयार किए गए मौलिक नियम और सिद्धांत ।

अभ्यास

मौखिक प्रश्न :

I. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिए :

१. जहाँ कोई राजा नहीं होता उस जनता के शासन को क्या कहते हैं ?
२. देश के सभी नागरिकों को दिये गए अधिकारों को क्या कहते हैं ?
३. पहले किस व्यवस्था के कारण होटलों, दुकानों में सभी नहीं जा सकते थे ?
४. बड़ी लोगों के द्वारा गरीब लोगों से मुफ्त में चाकरी लेने की व्यवस्था को क्या कहते हैं ?
५. देश के संविधान में व्यक्ति की वैयक्तिक संपत्ति को सरकार कब ले सकती है ?
६. क्या सरकारी स्कूल में किसी एक धर्म की शिक्षा पढ़ायी जाती है ?

लिखित प्रश्न :

II. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर एक वाक्य में लिखिए :

१. गणतंत्र देश किसे कहते हैं ?
२. संविधान में छुआ-छूत के विषय में क्या कर दी गई है ?
३. कितनी उम्र तक किसी बच्चे को कारखाने या खान में नौकरी पर नहीं रखा जा सकता है ?
४. किसी एक धर्म पर पक्षपात नहीं करने वाले राज्य को क्या कहा जाता है ?
५. किस न्यायालय का निर्णय भारत की सभी अदालतों को मानना पड़ता है ?

III. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर चार-पाँच वाक्यों में लिखिए :

१. हमारे देश के संविधान में क्या लिखा है ?
२. समता का अधिकार के संबंध में संविधान में कौन-कौन सी बातें लिखी गई हैं ?
३. धर्म-निरपेक्ष राज्य का क्या अभिप्राय है ? समझाइए ।
४. हकों की रक्षा के लिये संविधान में क्या व्यवस्था है ?

भाषा अध्ययन

I. निम्नलिखित शब्दों के विलोम रूप लिखिए :

धर्म, जमीन, उचित, स्वतंत्रता, नागरिक

II. ध्यान दीजिए :

‘सुपुत्र’ शब्द में ‘सु’ उपसर्ग ‘पुत्र’ के साथ (शब्द से पहले) जोड़ा गया है। इसी प्रकार स्वतंत्रता में ता प्रत्यय का प्रयोग, स्वतंत्र के साथ (शब्द के बाद में) जोड़ा गया है।

सही उपसर्ग, प्रत्ययों को चुनकर निम्न लिखित शब्दों में जोड़कर शब्द निर्माण कीजिए :

उपसर्ग - अ, अन्, कु, अनु

प्रत्यय - इक, आई, ता, ईय

शब्द - पुत्र, समान, समाज, वीर, पराजित, कारण, लिख, भारत ।

III. विशेषण और विशेष्य के टुब्द बनाइए :

विशेषण	विशेष्य
--------	---------

सरकारी	- संस्थाएँ
--------	------------

गरीब	- मूल्य
------	---------

धार्मिक	- न्यायालय
---------	------------

उचित	- आदमी
------	--------

उच्चतम	- अफसर
--------	--------

IV. योग्यता विस्तार :

- नागरिकों के मूल अधिकारों के साथ-साथ उनके कर्तव्यों की जानकारी प्राप्त करते हुए कक्षा में चर्चा कीजिए ।
- निम्नलिखित भारत का संविधान - उद्देशिका पढ़िए समझिए :

भारत का संविधान

उद्देशिका

हम, भारत के लोग, भारत को एक संपूर्ण प्रभुत्व संपन्न,
समाजवादी, पंथ-निरपेक्ष, लोकतंत्रात्मक गणराज्य
बनाने के लिए तथा उसके समस्त नागरिकों को ;

सामाजिक, आर्थिक और राजनैतिक न्याय ;

विचार, अभिव्यक्ति, विश्वास, धर्म और

उपासना की स्वतंत्रता ;

प्रतिष्ठा और अवसर की समता

प्राप्त करने के लिए

तथा उन सब में व्यक्ति की गरिमा और राष्ट्र की
एकता और अखंडता सुनिश्चित करनेवाली बंधुता
बढ़ाने के लिए ;

दृढ संकल्प होकर अपनी इस संविधान सभा में
आज तारीख 26 नवंबर, 1949 ई. (तिथि-मार्गशीर्ष शुक्ल
सप्तमी, संवत् दो हजार छह विक्रमी) को एतद्द्वारा इस संविधान को
अंगीकृत, अधिनियमित और आत्मार्पित करते हैं ।

सीप समान बनो: एक लक्ष्य चुन लो

मोती की सीप के समान बनो । एक बड़ी सुंदर भरतीय कथा है कि यदि स्वाति नक्षत्र में वर्षा का एक बूंद उस सीप में पड़ जाता है तो वह मोती बन जाता है । सीप यह बात जानती है, अतः वह स्वाति नक्षत्र को चमकते ही जल की सतह पर आ जाती है और उस मूल्यवान वर्षा की बूंद पाने के लिए प्रतीक्षा करती रहती हैं । जैसे ही कोई बूंद उसके मुख में प्रवेश करती है तो सीप तुरंत अपना मूँह बंद कर लेती है और डुबकी लगाकर समुद्र के तल पर पहुँच जाती है । वहाँ पर धैर्य-पूर्वक बूंद को मोती का रूप दे देती है ।

हम भी वैसे बनें । पहले सुनो, तब मनन करो, और अंत में सब दुविधा को छोड़कर अपने अंतः करण को बाह्य प्रभावों की ओर से बन्द कर लो । अपने अंदर उस सत्य के पोषण में लग जाओ । एक विचार को केवल उसके नए पन से अकर्षित हो अपना लेना और फिर उससे भी नए विचार के लिए उसको त्याग देने की वृत्ति से ही पुरी पंक्तियाँ बिखर जाने का भय है । एक विचार को लो तो उसे करो, उसे अंत तक पहुँचाओ और जब तक उसके छोर पर न पहुँचो उसे त्यागो मत । जो अपने लक्ष्य के प्रति पागल हो गया है, उसे ही प्रकाश का दर्शन होता है । जो थोड़ा इधर, थोड़ा उधर हाथ मारते हैं, वे कोई लक्ष्य पूर्ण नहीं कर पाते । वे कुछ क्षणों के लिए बड़ा जोश दिखाते हैं, किन्तु वह शीघ्र ठंडा हो जाता है ।

अतः एक लक्ष्य को ही अपना जीवन कार्य समझो । हर क्षण उसी का चिन्तन करो, उसी का स्वप्न देखो । उसी के सहारे जीवित रहो । मस्तिष्क, मांसपेशियाँ , नसें आदि शरीर के प्रत्येक अंग उसी विचार से ओत-प्रोत हो

और तब तक अन्य प्रत्येक विचार को किनारे पड़ा रहने दो । सफलता का यही राजमार्ग है । इसी मार्ग पर चलकर अब तक आध्यात्मिक महापुरुष पैदा हुए हैं । अन्यो को केवल बोलने वाले यंत्र समझो ।

सफलता के लिए अत्यधिक अध्यवसाय एवं प्रबल इच्छाशक्ति का होना अवश्य है । अध्यवसायी आत्मा कहती हैं, “मैं समुद्र को पी जाऊंगी । मेरी इच्छा मात्र से पर्वत चूर - चूर हो जाएंगे ।” यह कर्मशक्ति प्राप्त करो, कठोर परिश्रम करो और तुम निश्चित ही लक्ष्य पर पहुंच जाओगे ।

निम्न प्रश्नों का उत्तर लिखिए :

१. स्वामी विवेकानंदजी नव युवकों को किसके समान बनने को कह रहे हैं?
२. एक बड़ी सुंदर भारतीय कथा क्या है?
३. हमें कब मनन करना है?
४. अपना लक्ष्य कौन पूर्ण नहीं कर पाते ?
५. सफलता का राजमार्ग कौनसा है ?
६. अध्यवसायी आत्मा क्या कहती है ?
७. अपने लक्ष्य पर पहुँचने के लिए क्या - क्या करना चाहिए ?

टिप्पणी:

यह स्वामी विवेकानंद जी के भाषणों में से एक भाषण का अंश है ।



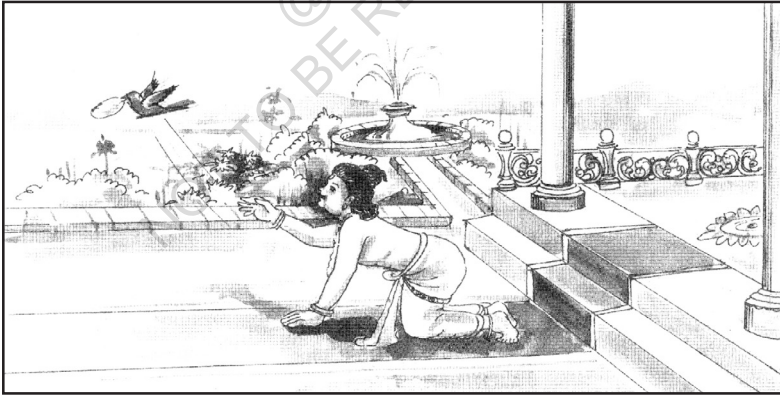
रसखान के सवैये



- रसखान

आशय : भक्त कवि रसखान को तो सारा संसार कृष्णमय लगता है । पहले सवैये में वे श्रीकृष्ण के सन्निधान में सदा रहने की अपनी अभिलाषा व्यक्त करते हैं । दूसरे और तीसरे सवैयों में क्रमानुसार श्रीकृष्ण के बालपन और यौवन के मनोहर रूप की छटा प्रस्तुत करते हैं ।

१. मानुष हौं तौ वही रसखानि, बसौं ब्रज गोकुल गाँव के ग्वारन ।
जो पसु हौं तो कहा बसु मेरौं, चरौं नित नंद की धेनु मँझारन ॥
पाहन हौं तो वही गिरि कौ, जो धरयो कर छत्र पुरंदर-धारन ।
जो खग हौं तो बसेरो करौं, मिलि कालिंदी-कूल कदंब की डारन ॥



२. धूरि भरे अति सोभित स्याम जू, तैसी बनी सिर सुंदर चोटी ।
खेलत खात फिरै अँगना, पग पैजनी बाजति पीरी कछोटी ॥
वा छवि को रसखानि बिलोकत, वारत काम कला निधि कोटी ।
काग के भाग बड़े सजनी, हरि-हाथ सों लै गयो माखन रोटी ॥

३. कल काननि कुंडल मोर-पखा, उर पै बनमाल बिराजति है ।
 मुरली कर मैं अधरा मुसकानि, तरंग महाछवि छाजति है ॥
 रसखान लखैं तन पीत-पटा, सत दामिनि की दुति लाजति है ।
 वहि बांसुरी की धुनि कानि परें, कुलकानि हियौ तजि भाजति है ॥

कवि परिचय :

रसखान (सन् १५५८-सन् १६२३)

गोस्वामी विट्ठलनाथ के शिष्य और परम कृष्ण-भक्त रसखान दिल्ली-निवासी एक पठान सरदार थे । आपका रचना काल सन् 1590 ई. के आस-पास माना जाता है । कृष्ण की भक्ति में मग्न होकर आपने बहुत से कवित्त और सवैये लिखे तथा प्रेमवाटिका नामक एक ग्रंथ की रचना दोहों में की । रसखान की भाषा ब्रज भाषा है और भाव-व्यंजना बिलकुल सीधी-सादी है । रचना-शैली की इस स्वाभाविकता के फलस्वरूप ही आपकी कविताओं का बहुत प्रचार है और उनमें सभी सहृदय भक्तों का हृदय हर लेने की क्षमता है । प्रेम-विषयक दोहे भी बड़े सुंदर हैं । आपकी कविताओं में प्रेम और भक्ति की सहज अभिव्यक्ति देखकर, भारतेन्दुजी ने सत्य ही कहा था -

इन मुसलमान हरिजनन पै कोटिन हिन्दू वारिए

नये शब्द :

- मानुष - मनुष्य, हों - बनों, बसों - रहूँ, पसु - पशु, धेनु - गाय, मँझारन - बीच में, पाहन - पत्थर, गिरि - पर्वत, कर - हाथ, छत्र - छाता, पुरंदर - इंद्रदेव, खग - पक्षी, बसेरा - निवास, कालिंदी - यमुना नदी, कूल - किनारा
- धूरि - धूल, पग - पैर, पैजनी - पाँव में हनने का आभूषण, पीरी - पीले रंग की, कछोटी - लंगोटी, छवि - सुंदरता, विलोकत - देखना, वारत - न्योछावर (त्याग करना)।

३. कल - सुंदर, काननि - कानों में, मोर-पखा - मोरपंख, उर - हृदय, छाती, अधर ओंठ, लखें - देखते हैं, पीतपटा - पीला वस्त्र, सत - सैकड़ों, दामिनि - बिजली, दुति - चमक, तजि - त्यागकर, कुलकानि - कुल की मर्यादा ।

भावार्थ :

१. इस पद में रसखान अगले जन्म में कृष्ण की संगति में रहने की अपनी प्रबल इच्छा को विविध रीति से बताते हैं । कहते हैं कि अगर अगले जन्म में कहीं मनुष्य शरीर पा लूँगा तो कृष्ण के प्रिय गाँव गोकुल के समीप ही उनके प्यारे ग्वालों के बीच में ही जन्म पा लूँ । अगर मेरा जन्म पशु रूप में होगा तो निवास कहाँ पर हो ? इसका उत्तर भी स्वयं देते हैं कि नंद महाराजा की गायों के मध्य में ठहरकर रोज (कृष्ण के द्वारा) चरता रहूँ । अगर मैं पत्थर रूप में जन्म लूँगा तो कृष्ण के द्वारा उठाए गए पहाड़ का ही एक भाग बन जाऊँ जिससे कृष्ण का स्पर्श सुख मिल सकता है । यदि पक्षी बनकर जन्मूँ तो यमुना नदी के किनारे पर बसे कदंब पेड़ों की डालियों में मेरा निवास स्थान हो, जिससे मैं कृष्ण की लीला का मधुर गान कर सकूँ ।
२. बालक कृष्ण की बाल-लीला का मनोहारी वर्णन इस पद में हुआ है । एक सखी अपनी सहेली से कहती है - सिर पर आकर्षक चोटी पहने, अंग पर धूल डाले कृष्ण अत्यंत सुंदर दीख रहे हैं । आँगन में खेलते भी, खाते भी दिखते हैं । पैरों में पैजनी व देह पर पीली कछोटी पहने हुए कृष्ण सुंदर दिखते हैं । कृष्ण की अद्भुत कांति के आगे मन्मथ की करोड़ों कलाएँ प्रयोजन रहित (नीरस) लगती हैं । इस बीच कृष्ण के हाथ से रोटी-माखन उड़ानेवाले कौए की

प्रशंसा करती हुई सखी अपनी सहेली को बतलाती है कि वह कौआ (कृष्ण भगवान के स्वाद का आनंद चुरानेवाला) सचमुच भाग्यशाली ही है ।

३. सौंदर्य के धनी श्री कृष्ण की अनुपम कांति का वर्णन रसखान ने इस पद में किया है - कृष्ण के कानों में सुंदर कुंडल हैं, सिर पर मोर का पंख विराजमान है । छाती पर वैजयंतीमाला आकर्षक लग रही है । हाथ में मुरली धारण किए हुए, मुस्कान के साथ खड़े कृष्ण के चारों ओर अलौकिक तेजयुक्त लहरें फैल रही हैं । श्री कृष्ण के पीले वस्त्र की शोभा के आगे सौ बिजलियों की चमक भी लजाती दिख रही है (श्रीहीन दिख रही है) और कृष्ण की बांसुरी की आवाज के कानों पर पड़ते ही कुल की मर्यादा को भूलकर गोपियाँ अपना घर त्यागकर कृष्ण के पास भागी-भागी आ रही हैं ।

अभ्यास

मौखिक प्रश्न :

I. निम्न लिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिए :

- १) रसखान अपने अगले मनुष्य जन्म में कहाँ रहना चाहते हैं ?
- २) खग बनकर किसकी डाली पर निवास करना चाहते हैं ?
- ३) श्रीकृष्ण माखन रोट्टी खाते हुए कहाँ घूम रहे हैं ?
- ४) श्रीकृष्ण की छाती पर क्या सुशोभित है ?

लिखित प्रश्न :

II. एक-एक वाक्य में उत्तर लिखिए :

१. कवि रसखान के आराध्य देव कौन हैं ?
२. पत्थर के रूप में रसखान कहाँ जन्म लेना चाहते हैं ?
३. धूल से भरे कृष्ण कैसे लगते हैं ?
४. कृष्ण के हाथ से रोटी छीनकर उड़ जानेवाला कौआ, कवि को क्या लगा ?
५. कृष्ण की बाँसुरी की ध्वनि सुनकर कुल की स्त्रियाँ क्या करती हैं ?
६. रसखान के पद किस भाषा में लिखे गये हैं ?

III. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर तीन-चार वाक्यों में लिखिए :

१. कवि ने श्रीकृष्ण के समीप रहने की अपनी इच्छा को किस तरह व्यक्त किया है ?
२. श्रीकृष्ण के रूप में सौंदर्य का वर्णन रसखान ने कैसे किया है ?
३. आँगन में खेलनेवाले श्रीकृष्ण का परिचय दीजिए ।

IV. भाव स्पष्ट कीजिए :

१. मानुष हौं तौ वही रसखानि, बसौं ब्रज गोकुल गाँव के ग्वारन ।
जो पसु हौं तो कहा बसु मेरौं, चरौं नित नंद की धेनु मँझारन ॥
पाहन हौं तो वही गिरि कौ, जो धरयो कर छत्र
पुरंदर-धारन । जो खग हौं तो बसेरो करौं, मिलि कालिंदी-कूल
कदंब की डारन ॥
२. कल काननि कुंडल मोर-पखा, उर पै बनमाल बिराजति है ।
मुरली कर मैं अधरा मुसकानि, तरंग महाछवि छाजति है ॥

रसखान लखैं तन पीत पटा, सत दामिनि की दुति लाजति है ।

वहि बाँसुरी की धुनि कानि परें, कुलकानि हियौ तजि भाजति है॥

V. निम्नलिखित भावों से संबंधित काव्य पंक्तियों को चुनकर लिखिए:

१. अगर मैं पक्षी बनूँ तो, यमुना तट पर कदंब की डाली पर रहूँ ।
२. अगर मैं मनुष्य बनूँ तो गोकुल गाँव में रहूँ ।
३. श्रीकृष्ण आंगन में खाते, खेलते घूम रहे थे ।
४. श्रीकृष्ण के रूप सौंदर्य पर करोड़ों कामदेव की शोभा न्योछावर हो ।
५. कौआ अत्यन्त भाग्यशाली है जो हरि के हाथ की रोटी ले गया ।
६. श्रीकृष्ण के पहने पीले वस्त्र को देखकर सैकड़ों बिजलियों की छवि शर्मा जाती है ।

VI. प्रथम पद को लय के साथ कंठस्थ कीजिए ।

भाषाभ्यास

I. निम्नलिखित शब्दों के तत्सम रूप लिखिए :-

- | | | | | |
|----------|--------|---------|--------|----------|
| १) मानुष | २) हिय | ३) पसु | ४) लाज | ५) सोभित |
| ६) सत | ७) कान | ८) दुति | | |

योग्यता विस्तार

- सूरदासजी ने भी श्रीकृष्ण के रूप सौन्दर्य का मनोहारी चित्रण किया है । रसखान के इन्हीं भावों से मिलनेवाले सूर के कुछ पद संकलित कीजिए ।

२. सवैया - यह वर्णिक समवृत छंद है, इसके एक चरण में २२ से लेकर २६ तक के वर्ण होते हैं, इसके प्रत्येक चरण में सात भगण (१४८) और में दो गुरू वर्ण होते हैं चारों चरणों में तुकांत होना चाहिए।

इसके कई भेद हैं - जिसमें मत्तगयंद, सुंदरी दुर्मिल प्रमुख हैं।
जिसमें ७ भगण २३ वर्ण होते हैं - तथ अंत में दो गुरू वर्ण होते हैं।

उदा - १. धूरि भरै अति शोभित श्यामजू, तैसी बनी सिर सुंदर चोटी।
खेलत - खात फिरै अंगना पग पैजनी, बागति पीरी कछौटी।
वा छबि को रसखानि विलोकत, वारत काम कला निधि कोटि।
काग के भाग बड़े सजनी, हरि हाथ सो ले गयो, माखन रोटी।



- कृष्णा सोबती

आशय : जीवन की सभी अवस्थाओं में सबसे मीठी अवस्था बचपन होती है। बचपन की यादें आदमी के जीवन भर हरी भरी रहती हैं। यहाँ लेखिका अपने बचपन का स्मरण करते हुए उसकी मिठास को फैला रही हैं।

मैं तुम्हें अपने बचपन की ओर ले जाऊँगी। मैं तुमसे कुछ इतनी बड़ी हूँ कि तुम्हारी दादी भी हो सकती हूँ, तुम्हारी नानी भी। बड़ी बुआ भी बड़ी मौसी भी। परिवार में मुझे सभी लोग जीजी कहकर ही पुकारते हैं। हाँ, मैं इन दिनों कुछ बड़ा-बड़ा यानी उम्र में सयाना महसूस करने लगी हूँ। शायद इसलिए कि पिछली शताब्दी में पैदा हुई थी।

मेरे पहनने-ओढ़ने में भी काफी बदलाव आए हैं। पहले मैं रंग-बिरंगे कपड़े पहनती रही हूँ। नीला-जामुनी-ग्रे-काला-चाँकलेटी। अब मन कुछ ऐसा करता है कि सफेद पहनो। गहरे नहीं, हलवेफ रंग। मैंने पिछले दशकों में तरह-तरह की पोशाक पहनी हैं। पहले फ्राँक, फिर निकर-वाँकर, स्कर्ट, लहंगे, गरारे और अब चूड़ीदार और घेरदार कुर्ते। बचपन वेफ वुफछ फ्राँक तो मुझे अब तक याद हैं। हलकी नीली और पीली धारीवाला फ्राँक। गोल कॉलर और बाजू पर भी गोल कतफ। एक हलके गुलाबी रंग का बारीक चुन्नटोंवाला घेरदार फ्राँक। नीचे गुलाबी रंग की फ्रिल। उन दिनों फ्राँक के ऊपर की जेब में रूमाल और बालों में इतराते रंग-बिरंगे रिबन का चलन था। लैमन कलर का बड़े प्लेटोंवाला गर्म फ्राँक जिसके नीचे फिर टँकी थी। ध्वसंत दो ट्यूनिक भी याद हैं। एक चाँकलेट रंग का और अंदर की कोटी पीले। दूसरा ग्रे और उसके साथ सफेद कोटी। मुझे अपने मोजे

और स्टॉकिंग भी याद हैं! बचपन में हमें अपने मोजे खुद धेने पड़ते थे। वह नौकर या नौकरानी को नहीं दिए जा सकते थे। इसकी सख्त मनाही थी।

हम बच्चे इतवार की सुबह इसी में लगाते। धे लेने वेफ बाद अपने-अपने जूते पॉलिश करवेफ चमकाते। जब जूते कपड़े या ब्रश से रगड़ते तो पॉलिश की चमक उभरने लगती। सरवर, मुझे आज भी बूट पॉलिश करना अच्छा लगता है। हालाँकि अब नई-नई किस्म के शू आ चुके हैं। कहना होगा कि ये पहले से कहीं ज्यादा आरामदेह हैं। हमें जब नए जूते मिलते, उसके साथ ही छालों का इलाज शुरू हो जाता।

जब कभी लंबी सैर पर निकलते, अपने पास रुई जरूर रखते। जूता लगा तो रुई मोजों के अंदर। हाँ, हमारे-तुम्हारे बचपन में तो बहुत फर्क हो चुका है। हर शनीचर को हमें ऑलिव ऑयल या वैफस्टर ऑयल पीना पड़ता। यह एक मुश्किल काम था। शनीचर को सुबह से ही नाक में इसकी गंध आने लगती!



छोटे शीशे के गिलास जिन पर ठीक खुराक के लिए निशान पड़े

रहते, उन्हें देखते ही मितली होने लगती। मुझे आज भी लगता है कि अगर हम न भी पीते वह शनिवारी दवा तो कुछ ज्यादा बिगड़ने वाला नहीं था। सेहत ठीक ही रहती। बचपन तुम्हें बताऊँगी कि हमारे समय और तुम्हारे समय में कितनी दूरी हो चुकी है। यहाँ तक कि बचपन की दिलचस्पियाँ भी बदल गई हैं। याद रहे, उन दिनों कुछ घरों में ग्रामोफोन थे, रेडियो और टेलीविजन नहीं थे।

हमारे बचपन की वुफलपफी आइसक्रीम हो गई है। कचौड़ीसमोसा पैटी में बदल गया है। शहतूत और पफाल्से और खसखस वेफ शरबत कोक-पेप्सी में। उन दिनों कोक नहीं, लैम्नेड, विमटो मिलती थी। शिमला और नई दिल्ली में बड़े हुए बच्चों को वैंगर्स और डेविको रेस्तराँ की चॉकलेट और पेस्ट्री मा देनेवाली होती। हम भाई-बहनों की ड्यूटी लगती शिमला माल से ब्राउन ब्रैड लाने की। हमारा घर माल से ज्यादा दूर नहीं था। एक छोटी-सी चढ़ाई और गिरजा मैदान पहुँच जाते। वहाँ से एक उतराई उतरते और माल पर। कन्पैफक्शनरी काउंटर पर तरह-तरह की पेस्ट्री और चॉकलेट की खुशबू मनभावनी!

हमें हफ्ते में एक बार चॉकलेट खरीदने की छूट थी। सबसे ज्यादा मेरे पास ही चॉकलेट-टॉफी का स्टॉक रहता। मैं चॉकलेट लेकर खड़े-खड़े कभी न खाती। घर लौटकर साइडबोर्ड पर रख देती और रात के खाने के बाद बिस्तर में लेटकर मो ले-ले खाती। शिमला के फल भी बहुत ज्यादा आते हैं। खट्टे-मीठे। कुछ एकदम लाल, कुछ गुलाबी। रसभरी। कसमल। सोचकर ही मुँह में पानी भर आए। चैस्टनट एक और गाब की चीज़ आग पर भूने जाते और फिर छिलके उतारकर मुँह में। चने जोर गरम और अनारदाने का चूर्ण! हाँ, चने जोर गरम की पुड़िया जो तब थी, वह अब भी याद आती है। पुराने कागों से बनाई हुई इस पुड़िया में निरा हाथ का कमाल है।

नीचे से तिरछी लपेटते हुए ऊपर से इतनी चौड़ी कि चने आसानी से हथेली पर पहुँच जाएँ। एक वक्त था जब फिल्म का गाना-चना जोर गरम बाबू में लाया मोदार, चना जोर गरम-यह गाना उन दिनों स्कूल के हर बच्चे को आता था। कुछ बच्चे पुड़िया पर तो मसाला बुरकवाते। पूरा गिरजा मैदान घूमने तक यह पुड़िया चलती। एक-एक चना-पापड़ी मुँह में डालने और कदम उठाने में एक खास ही लय-रफ़्तार थी।

छुटपन में हमने शिमला रिज पर बहुत मो किए हैं। घोड़ों की सवारी की है। शिमला के हर बच्चे को कभी-न-कभी यह मौका मिल ही जाता था। हम जाने क्यों घोड़ों को कुछ कमतर करके समझते। उन पर हँसते थे। ननिहाल के घोड़े खूब हृष्ट-पुष्ट और खूबसूरत। उनकी बात फिर कभी।



बचपन शाम को रंग-बिरंगे गुब्बारे। सामने जाखू का पहाड़। ऊँचा चर्च। चर्च की घंटियाँ बजतीं तो दूर-दूर तक उनकी गूँज फैल जाती। लगता, इसके संगीत से प्रभु ईशू स्वयं कुछ कह रहे हैं। सामने आकाश पर सूर्यास्त हो रहा है। गुलाबी सुनहरी धरियाँ नीले आसमान पर फैल रही हैं। दूर-दूर फैले पहाड़ों के मुखड़े गहराने लगे और देखते-देखते बत्तियाँ टिमटिमाने लगीं। रिज पर की रौनक और माल की दुकानों की चमक के भी क्या कहने! स्क्वैडल प्वाइंट की भीड़ से उभरता कोलाहल।

सरवर, स्वीफडल प्वाइंट के ठीक सामने उन दिनों एक दुकान हुआ करती थी, जिसके शोरूम में शिमला-कालका ट्रेन का मॉडल बना हुआ था। इसकी पटरियाँ उस पर खड़ी छोटे-छोटे डिब्बों वाली ट्रेन। एक ओर लाल टीन की छतवाला स्टेशन और सामने सिगनल देता खंबा थोड़ी-थोड़ी दूर पर बनी सुरंगें!



पिछली सदी में तो रफ़्तारवाली गाड़ी वही थी। कभी-कभी हवाई जहाज भी देखने को मिलते! दिल्ली में जब भी उनकी आवाज़ आती, बच्चे उन्हें देखने बाहर दौड़ते। दीखता एक भारी-भरकम पक्षी उड़ा जा रहा है पंख फैलाकर। यह देखो और वह गायब! उसकी स्पीड ही इतनी तो लगती। हाँ, गाड़ी के मॉडलवाली दुकान के साथ एक और ऐसी दुकान थी जो मुझे कभी नहीं भूलती। यह वह दुकान थी जहाँ मेरा पहला चश्मा बना था। वहाँ आँखों के डॉक्टर आते थे। शुरू-शुरू में चश्मा लगाना बड़ा अटपटा लगा। छोटे-बड़े मेरे चेहरे की ओर देखते और कहते आँखों में कुछ तकलीफ है! इस उम्र में ऐनक! दूध पिया करो। मैं डॉक्टर साहिब का कहा दोहरा देती कुछ देर पहनोगी तो ऐनक उतर जाएगी। वैसे डॉक्टर साहिब ने पूरा आश्वासन दिया था, लेकिन चश्मा तो अब तक नहीं उतरा। नंबर बस कम ही होता रहा! मैं अपने-आप इसकी जिम्मेवार हूँ। जब आप दिन की रोशनी को छोड़कर

रात में टेबल लैंप के सामने काम करेंगी तो इसके अलावा और क्या होगा! हाँ, जब पहली बार मैंने चश्मा लगाया तो मेरे एक चचेरे भाई ने मुझे छोड़ा देखो, देखो, कैसी लग रही है!

आँख पर चश्मा लगाया ताकि मुझे दूर की यह नहीं लड़की को मालूम सूरत बनी लंगूर की! मैं खीजी कि मुझ पर यह क्यों दोहराया जा रहा है! पर शेर बुरा न लगा। जब वह चाय पीकर चले गए तो मैं अपने कमरे में जाकर आईने के सामने खड़ी हो गई। कई बार अपने को देखा। ऐनक उतारी। फिर पहनी। फिर उतारी। देखती रहीदेखती रही। सूरत बनी लंगूर की नहीं- नहीं-नहीं हाँ-हाँ-हाँ बचपन मैंने अपने छोटे भाई का टोपा उठाकर सिर पर रखा। कुछ अजीब लगा। अच्छा भी और माकिया भी। तब की बात थी, अब तो चेहरे के साथ घुल-मिल गया है चश्मा। जब कभी उतरा हुआ होता है तो चेहरा खाली-खाली लगने लगता है। याद आ गया वह टोपा काली फ्रेम का चश्मा और लंगूर की सूरत! हाँ, इन दिनों शिमला में मैं सिर पर टोपी लगाना पसंद करती हूँ। मैंने कई रंगों की जमा कर ली हैं। कहाँ दुपट्टों का ओढ़ना और कहाँ सहज सहल सुभीते वाली हिमाचली टोपियाँ!

लेखिका परिचय :

लेखिका परिचय : कृष्ण सोबती का जन्म 18 फरवरी 1925 को हुआ था। ये हिंदी की काल्पितार्थ (फिक्शन) एवं निबंध लेखिका हैं। उन्हे 1980 में साहित्य अकादमी पुरस्कार प्राप्त हुआ। उन्होंने हिंदी की कथा भाषा को विलक्षण ताज़गी दी है। इनकी प्रमुख कृतियाँ हैं - डार से बिछुड़ी, मित्रो मरजानी, आदि ।

शब्दार्थ :

सयाना - बालिग, घेरदार - बड़े घेरेवाला, ढीला - ढाला; धारी - पट्टी, लकीर; चुन्नट - कपड़े को ढीला छोड़कर सिला हुआ भाग, परत; इतराना - धमंड़ करना, इठलाना; चलन - प्रथा, रीति - रिवाज़; प्लेटोंवाला - अस्तर चढ़ाया हुआ, ट्यूनिक - कुर्ता, कुर्ती, सिपाही का छोटा कोट (उरीं); कोटी - छोटा कोट, मनाही - निषेध, छाल - ऊपरी परत, मितली - उलटी, वमन; शहतूत - Mulberry fruit, फालसा - फालसेब, गर्मी के मौसम का एक खट्टा - मीठा फल; लेमनेड - नींबू का मीठा शरबत, विमटो - शक्तिवर्धक पेय का नाम, काफल - शिमला का प्रांतीय फल, कसमल - मोहित करनेवाला, मोहक ; चेस्टनट -अखरोट, बुरकवाना - छिड़कवाना, रिज - रिङ्ग, ढलुवाँ टीला; ननिहाल-माता का मायका, अटपटा - अजीब, असंगत; खीझना - खीजना, नाराज़ होना; शेर - उर्दू काव्य की एक विधा, टोपा - बड़े आकार की टोपी, सुभीता - सुविधा, आराम।

सश्वर - 'सरदार'

यह ऐसे ही एक संबोधन है जिसका प्रयोग बोल-चाल में सहज ही किया जाता है।

अभ्यास

मौखिक प्रश्न :

I. निम्न प्रश्नों का उत्तर दीजिए :

१. लेखिका कौनसी शताब्दी में पैदा हुई थी।
२. इतवार के दिन बच्चे किस काम में लग जाते?
३. लेखिका के बचपन की फुलफी अब किसमें बदल गयी है?

४. किसकी पुड़िया तब भी और अब भी नज़र आती है?

५. शुरू-शुरू में चश्मा लगाना लेखिका को कैसे लगा?

लिखित प्रश्न :

II. एक वाक्य में उत्तर लिखिए :

१. लेखिका पहले किस प्रकार के कपड़े पहनती रहीं?
२. अब उनका मन किस रंग का कपड़ा पहनने को करता है?
३. बचपन में मोजे धोने के लिए किसको देने से मनाही थी?
४. कौन-कौन-से शरबत कोक-पेप्सी में बदल गये हैं?
५. कुछ बच्चे चने की पुड़िया पर क्या करवाते?
६. कोलाहल कहाँ से उभरता था?
७. पिछली सदी की तेज रफ़तास्वाली गाड़ी कौनसी थी?
८. पहली बार चश्मा लगाने पर लेखिका को किसने छोड़ा?

III. तीन-चार वाक्यों में उत्तर लिखिए :

१. लेखिका अपने को कितनी बड़ी कहती हैं?
२. लेखिका के बचपन के कुछ फ़ाँक कैसे थे?
३. 'तुम्हें बताऊँगी कि हमारे समय और तुम्हारे समय में कितनी दूरी हो चुकी है।' सि बात की पुष्टि के लिए लेखिका क्या-क्या उदाहरण देती हैं?

IV. पाँच-छ : वाक्यों में उत्तर लिखिए :

१. शनीचर के दिन लेखिका का क्या कार्यक्रम था? शनिवारी दवा के बारे में लेखिका ने क्या कहा है?
२. लेखिका को चश्मा क्यों पहनने पड़ा? उनके चचेरे भाई ने उन्हें कैसे छोड़ा?

V. लेखिका की पोशाकों के बारे में उल्लेख है। अब आप अपनी पोशाकों की एक सूची बनाइए :

लेखिका की पोशाकें

हमारी पोशाकें

१. फ्रॉक
२. निकर
३. स्कर्ट
४. लहंगे
५. चूड़ीदार
६. कुर्ता
७. कोटी

VI. पाठ में लेखिका ने कुछ रिश्तों का नाम बताया है। आप अन्य कुछ रिश्तों के बारे में लिखिए :

जैसे : दादी - पिताजी की माँ

- | | |
|-----------------|----------------------|
| १. नानी - | ६. नाना - |
| २. बुआ - | ७. चाचा - |
| ३. मौसी - | ८. बड़ी बुआ - |
| ४. जीजी - | ९. बड़ी मौसी - |
| ५. दादा - | १०. मामा - |

भाषा अध्ययन

I. पाठ में प्रयुक्त सभी अंग्रेज़ी शब्दों की सूची बनाइए। उनके लिए हिंदी शब्द जानिए।

II. पाठ में 'टोपा' और टोपी दोनों शब्दों का प्रयोग हुआ है।

टोपा - जिसका आकार बड़ा हो।

टोपी - जिसका आकार छोटा हो।

इसी प्रकार के अनेक शब्दों का प्रयोग हम हिंदी भाषा में करते हैं।
ऐसे पाँच शब्द लिखिए।

III. 'लेखिका पिछली शताब्दी में पैदा हुई थीं।'

सोचकर लिखिए कि अब कौनसी शताब्दी चल रही है?

शताब्दी का मतलब क्या है?

IV. हिंदी भाषा में दस रंगों का नाम लिखिए।

V. 'धारीवाला' शब्द में 'वाला' प्रत्यय है जो 'धारी' शब्द से जुड़ा है और एक नया शब्द बना रहा है।

पाठ में से 'वाला' शब्दों की सूची बनाइए और अर्थ समझिए।

योग्यता विस्तार :

- अपने बचपन की कोई मनमोहक घटना याद करके १०-१५ वाक्य लिखिए।
- 'सरवर' की तरह बोल-चाल में प्रयुक्त अन्य संबोधन शब्दों की जानकारी प्राप्त कीजिए।



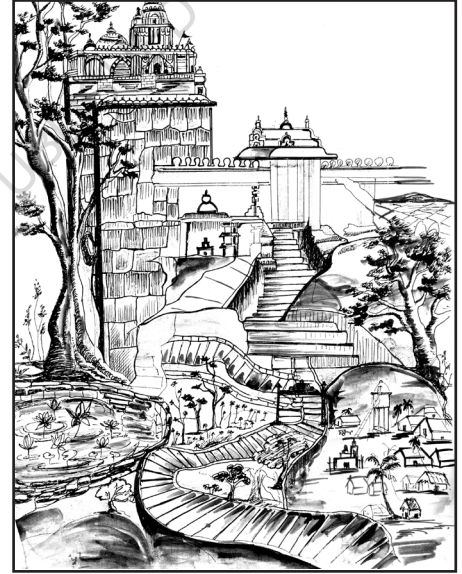
प्राकृतिक स्थल - बदरीनाथ



- श्रीमती वासवी रंगधाम

आशय : बदरीनाथ भारत के उत्तर में हिमालय की घाटियों में स्थित एक सुंदर प्राकृतिक स्थल है, जहाँ प्रकृति ने अपनी सारी सुंदरता बिखेर रखी है। यह एक प्रेक्षणीय स्थल है, जहाँ हर वर्ष, प्रकृति प्रेमी आते हैं। बदरीनाथ एक पवित्र धाम के रूप में भी प्रसिद्ध है।

प्रकृति के साथ मनुष्य का गहरा संबंध है। मनुष्य का सारा जीवन प्रकृति की गोद में पलता है। प्रकृति से मनुष्य एक क्षण के लिए भी अलग नहीं रह सकता। क्योंकि हम जो खाते हैं, जो पहनते हैं, देखते-देखते जो अपने को भूल जाते हैं, वे सभी प्रकृति के वरदान हैं। प्रकृति के सुंदर दृश्यों के प्रति मनुष्य का स्वाभाविक आकर्षण होता है। प्रकृति सदैव ही मनुष्य जीवन को प्रभावित करती आयी है।



हमारा भारत प्राकृतिक सौंदर्य से भरा हुआ है। जिनमें ऊँची-ऊँची पहाज्जदियों, लंबी-लंबी नदियों और घने-घने जंगलों की शोभा भरी है। इन तीनों को एक ही स्थान में देखें तो मनुष्य मुग्ध हो जाता है। हिमालय पर इन तीनों को एक साथ देख सकते हैं। इन तीनों ने मिलकर हिमालय के सौंदर्य को बज्जफा दिया है। हिमालय को भगवान शंकर का वासस्थान कहते हैं।

प्राकृतिक दृश्यों को देखने के लिए लोग काश्मीर, बदरीनाथ, मसूरी, नैनीताल, केदारनाथ आदि की यात्रा करते हैं । पिछले वर्ष मुझे भी इन प्राकृतिक दृश्यों को देखने का मौका मिला। मुझे इन प्राकृतिक स्थानों में बदरीनाथ सबसे आकर्षक लगा । बदरीनाथ समुद्र तल से 20, 244 फुट ऊपर स्थित है । पर्वत-वृक्षों की मनोरम पृष्ठभूमि में बसा हुआ, स्वर्ग से सुंदर बदरीनाथ भारत का भव्य भाल ही नहीं, अपितु ग्रीष्म कालीन पर्वतीय प्रांतों में सर्वोत्तम भी है। इसका मार्ग अत्यंत टेढ़ा-मेढ़ी, फिसलदार एवं खतरनाक है । रास्ते के एक तरफ हजारों फुट लंबे पहाड़ की चोटियाँ हैं तो दूसरी तरफ हजारों फुट नीचे गहरी-गहरी नदियाँ बहती हैं। हिमालय पहाड़ हरे-भरे पेड़ों से भरा दिखाई देता है । जब हम उस दुर्गम चढ़ाई पारकर ऊपर पहुँचते हैं तो ऐसा प्रतीत होता है मानो बदरीनाथ इस परिश्रम का पुरस्कार है । यहाँ प्रकृतिश्री का साक्षात्कार करके हम धन्य हो जाते हैं । चारों ओर बर्फ से ढके हुए पहाड़ों के नीचे चारों ओर प्रकृति अपनी हरी चादर ओढ़कर एक अंगड़ाई लेती-सी प्रतीत होती है । यहाँ यात्री प्रकृति के उस अक्षय भंडार के दर्शन करते हैं, जो अत्यंत दुर्लभ है । बीच में छोटे-छोटे झरने, बर्फ से ढके पहाड़ झील आदि पर्वत श्रृंखला दृश्य को अति मनोरम बना देते हैं, गगनचुंबी पर्वतों में से निकलती पतली-पतली जलधाराएँ मन को शांति एवं सुख प्रदान करती हैं । यहाँ पर प्रकृति मानो अपने पूर्ण आभूषणों के साथ थिरकती-सी प्रतीत होती है । यह शैल सुंदरी (बदरी) देश-विदेश के यात्रियों तथा शैलानियों को अपनी ओर आकर्षित करती जा रही है । जब भास्कर की किरणें नृत्य करती हैं तो पूरा यह बर्फ का पहाड़ कुंदन बन जाता है । बादल उज्ज शिखरों से ऊपर की ओर बढ़ते जाते हैं । नदी अलकनंदा इतनी जोर से बहती है कि पानी दूध जैसा लगता है । उसका पानी बर्फ जैसा ठंडा होता है और दूसरी तरफ गरम पानी की धाराएँ भी हैं ।

संध्या के समय सूर्य के अस्त होने का दृश्य अति मनोरम होता है । आकाश पर लालिमा छा जाती है । पूरा बर्फ़ का पहाड़ लाल क़ांच-सा चमकने लगता है और बादल नीचे आ जाते हैं । थोड़ी देर में बादल इतने नीचे आ जाते हैं कि एक दूसरे को देख भी नहीं सकते । पक्षी अपने मीठे कलरव के साथ अपने घोंसलों को लौटते रहते हैं ।

रात के समय तो तारे व चाँद अपनी अपूर्व शोभा के साथ चमकते रहते हैं। झरने तथा सरिताओं के बहने की आवाज़ सुनाई पड़ती रहती है । पूर्णिमा के दिन तो पहाड़ चाँदी का पहाड़ बन जाता है ।

बदरीनाथ के पाँच मील दूर पर वसुंधरा नामक जलप्रपात 1,200 फुट ऊँचाई पर स्थित है । 400 फुट ऊँचा जलप्रपात वसुंधरा सबको अपनी ओर आकृष्ट करता है ।

सूर्यास्त की वेला का मनमोहक दृश्य, जिसे देखकर ऐसा भास होता है, मानो संसार की समस्त मादकता यहीं पर एकत्रित हो उठी है । मानव को अपना जीवन सुंदर, सरस और स्वस्थ बनाने के लिए, प्रकृति से अनुराग रखना आवश्यक है ।



लेखिका परिचय :

श्रीमती वासवी रंगधाम हिंदी साहित्य के क्षेत्र में चर्चित लेखिकाओं में एक हैं। आपने देश के कई प्रेक्षणीय स्थलों की यात्रा कर अपने अनुभवों को रचना द्वारा साकार किया है। प्रस्तुत पाठ में लेखिका ने बदरीनाथ यात्रा का रोमांचकारी वर्णन किया है।

विशेष सूचना : प्राकृतिक विपदाओं से लोगों को बचाने के लिये, मई से नवंबर के बीच बदरीनाथ मार्ग खुला रहता है। अतः इस समय यहाँ की यात्रा की जा सकती है।

शब्दार्थ :

ग्रीष्म - गरमी का मौसम, कुंदन - सोना, सरिता - नदी, वासस्थान - रहने की जगह, थिरकती नृत्य करती, शैल सुंदरी - पर्वत की रानी, भास्कर - सूर्य, वेला - समय, कलरव - पक्षियों की ध्वनि, पूर्णिमा - पूर्ण चाँद की रात, भाल - माथा, शान, चमक।

अभ्यास

मौखिक प्रश्न :

I. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए :

1. मनुष्य का सारा जीवन किसकी गोद में पलता है ?
2. प्रकृति सदैव किसको प्रभावित करती आयी है ?
3. अलकनंदा का पानी बहते समय कैसा लगता है ?
4. पहाड़ चाँदी के पहाड़ जैसा कब दिखता है ?
5. वसुंधरा जलप्रपात कितने फुट ऊँचा है ?

लिखित प्रश्न :

II. निम्नलिखित प्रश्नों के एक-दो वाक्यों में उत्तर लिखिए :

१. प्रकृति के साथ मनुष्य का कैसा संबंध है ?
२. लेखिका को सबसे आकर्षक प्राकृतिक स्थल कौन सा लगा ?
३. गगनचुम्बी पर्वतों में से निकली जलधाराएँ मन को क्या प्रदान करती हैं ?
४. बदरीनाथ से पाँच मील दूर कौन सा जलप्रपात स्थित है ?
५. मानव को प्रकृति से अनुराग रखना क्यों आवश्यक है ?

III. तीन-चार वाक्यों में उत्तर लिखिए :

१. प्रकृति और मनुष्य के आपसी संबंध के बारे में लिखिए ।
२. पाठ में अलकनंदा नदी के संबंध में क्या कहा गया है ?
३. बदरीनाथ में संध्या समय की मनोहरता का वर्णन कैसे किया गया है ?
४. बदरीनाथ के प्राकृतिक सौन्दर्य के बारे में लिखिए ।

IV. रिक्त स्थानों में उचित शब्द भरिये :

१. भारत..... सौन्दर्य से भरा हुआ है ।
२. हिमालय को भगवान शंकर का..... कहते हैं ।
३. बदरीनाथ समुद्रतल से.....फुट ऊपर स्थित है ।
४. के दिन तो पहाड़ चाँदी का पहाड़ बन जाता है ।

भाषा अध्ययन

I. उचित शब्द चुनकर, खाली स्थान भरिए :

१. बदरीनाथ भारत का भव्य भाल ही नहीं ग्रीष्म कालीन पर्वतीय प्रांत में सर्वोत्तम है। (अपितु, अथवा)
२. रास्ते के हजारों फूट लम्बे पहाड़ों की चोटियाँ हैं ।
(एक और, एक तरफ)
३. यहाँ पर प्रकृति अपने पूर्ण आभूषणों के साथ थिरकती सी प्रतीत होती है । (और, मानो)

II. निम्नलिखित शब्दों के तीन-तीन पर्यायवाची शब्द लिखिए :

भास्कर, नदी, पर्वत, चाँद

योग्यता विस्तार

- अपने द्वारा की गई किसी भी एक यात्रा का वर्णन पंद्रह-बीस पंक्तियों में लिखिए ।

पूरक वाचन

पाप और पुण्य

बहुत पुरानी घटना है। एक दिन पाप और पुण्य एक जंगल में अचानक मिले। पाप ने पुण्य से कर्कश आवाज़ में पूछा - "कौन हो तुम?"

"मेरा नाम पुण्य है।" पुण्य ने शांति और शालीनता से उत्तर दिया।

पाप ने कहा - "अच्छा, तो तुम हो मेरे विरोधी!"

"नहीं भैया, मैं तुम्हारा क्या, किसी का भी विरोधी नहीं।" पुण्य ने नम्रता से कहा।

"तुम कोई करामात दिखा सकते हो?" पाप ने पूछा।

"मेरे पास कोई करामात नहीं है।" पुण्य ने उत्तर दिया।

"मेरी करामात देखना पसंद करोगे?" पाप ने अकड़कर पूछा।

पुण्य बोला - "दिखाओ।"

इतना सुनते ही पाप ने अपने आपको सोने का मृग बना लिया। पुण्य एक पेड़ के पीछे छिप गया। उसी समय शिकार खोजते हुए दो शिकारी पहुँचे। उन्होंने सोने के हिरण को देखा तो मार डाला। ज्यों ही वे मरे हुए हिरण की तरफ बढ़े, पीछे से आवाज़ आई - "हम भी इसका शिकार करने वाले थे। आधा हिरण हमारा है। दो शिकारी वहाँ और आ गए थे। अंत में उनमें आधा-आधा हिरण बाँटने का फैसला हुआ।" गरमी का मौसम था। उन चारों को प्यास सताने लगी। पहले दो शिकारियों ने कहा - "हम यहाँ बैठे हैं। तुम दोनों पानी पी आओ। हमारे लिए भी लेते आना। तभी हिरण के हिस्से करेंगे।"

वे दोनों पानी लेने चले गए। उन्होंने तालाब पर पहुँच कर पहले जी भरकर पानी पिया तथा उन दोनों शिकारियों के लिए पानी ले लिया। रास्ते में उनके मन में लालच घर गया। उन दोनों ने पानी में ज़हर मिलाकर उन दोनों शिकारियों को मारकर हिरण को आधा-आधा बाँटने का फैसला किया। उन्होंने पानी में जहर मिला दिया।

इधर हिरण के पास बैठे शिकारियों के मन भी पाप आ गया। उन्होंने आपस में तय किया - "क्यों न हम उन दोनों को आते ही मार डालें। वे मर गये, तो पूरा हिरण हमें ही मिलेगा।"

जैसे ही शिकारी पानी लेकर पहुँचे, दोनों मार डाले गए। मारनेवाले प्यासे तो थे ही। पेट थे ही। पेट भरकर पानी पिया और कुछ ही देर में तड़प-तड़प कर दम तोड़ दिया। उनके मरते ही पाप ने अपना वास्तविक रूप धारण कर लिया। वह ठहाका मारकर हँसने लगा और बोला - "देखी मेरी करामत?"

पुण्य ने कहा - "भैया, दूसरों की जान लेना क्या करामात है। मैं तो तब जानूँ, जब तुम किसी मरे को जीवित कर दो।" मरे को जीवित करना पाप की शक्ति से बाहर था। शर्म से उसकी गरदन झुक गई। वह धीरे-धीरे पाप की बस्ती की ओर चला गया।

अभ्यास

इन प्रश्नों के उत्तर लिखिए :

१. पाप और पुण्य की मुलाकात कहाँ हुई?
२. पाप ने अपना विरोधी किसे बताया?
३. पाप ने किसका रूप धारण किया?
४. पानी लेने गए शिकारियों के मन में क्या पाप आया?
५. चारों शिकारियों का अंत कैसे हुआ?
६. पाप ने अपनी शक्ति की क्या सीमा बताई?



मीराबाई के पद



- मीराबाई

आशय : मीरा के गीत उनकी अन्तरात्मा की पुकार है, हृदय की कसक है, वियोगिनी का क्रन्दन है। प्रथम पद में मीरा ने कृष्ण के प्रति एकनिष्ठ प्रेम व्यक्त किया है। वे कृष्ण को ही अपना सब कुछ मानती हैं। कृष्ण के बिना मीरा को सारा संसार निस्सार दिखाई देता है।

दूसरे पद में मीरा ने अपनी विरह-वेदना प्रकट की है। वे विरह से पागल होकर घूम रही है। कृष्ण ही उनका दर्द दूर कर सकते हैं।



(1)

मैं तो साँवरे के रंग राची ।

साजि सिंगार बाँधि पग घुँघरू, लोक लाज तजि नाची ॥

गई कुमति लई साधु की संगति, भगति रूप भई साँची ।

गाय-गाय हरि के गुण निसिदिन, काल ब्यालु सूँ बाँची ॥
 उण बिन सब जग खारो लागत, और बात सब काँची ।
 मीराँ श्री गिरिधरन सूँ, भगति रसीली जाँची ॥ १ ॥

(2)

हे री ! मैं तो प्रेम दिवाणी, मेरो दरद न जाणै कोय ॥
 घायल की गति घायल जाणै, की जिण लाई होय ।
 जौहरि की गति जौहरी जाणै, की जिण जौहर होय ॥
 दरद की मारी बन-बन डोलूँ, बैद मिल्या नहि कोय ।
 मीराँ की प्रभु पीर मिटेगी, जब बैद साँवलिया होय ॥ २ ॥

कवयित्री परिचय :

कृष्ण भक्तिन मीराबाई का स्थान भक्त कवयित्रियों में अद्वितीय है । इनका जन्म राजस्थान के मेड़ता में सन् १४९८ ई. के लगभग हुआ और मृत्यु सन् १५४६ ई. के आसपास हुई । मीरा के पिता का नाम राजा रत्नसिंह था । इनका विवाह उदयपुर के राणा सांगा के पुत्र भोजराज से हुआ था । थोड़े दिनों के बाद ही मीरा विधवा हो गई; अब इनका मन ईश्वर प्रेम में डूब गया और कृष्ण भक्ति में दीवानी हो गई। आपकी भाषा राजस्थानी, गुजराती और ब्रजभाषा का मिश्रण है । नरसीजी का माहरा, गीत-गोविंद की टीका, सोरठ के पद आदि मीराबाई की प्रमुख रचनाएँ हैं । विद्वान लोग पदावली को ही प्रामाणिक मानते हैं ।

शब्दार्थ :

१. राँची - रंग गई, अनुरक्त हुई, कुमति - कुबुद्धि, दुर्मति, लई - लेकर, तजी - त्यागकर, साँची - सच्ची, ब्यालु - सर्प, बाँची - बच गई, खारो - कड़वा, निस्सार, काँची - कच्ची, नश्वर, रसीली - रसपूर्ण, आनंद से भरी हुई, जाँची - देखी ।

भावार्थ :

मीरा कहती है कि मैं तो साँवरे कृष्ण के रंग में रंग गई हूँ । मैं लोक लाज त्यागकर उनके सामने पैरों में घुँघरू बाँधकर नाची हूँ । साधुओं की संगति में मेरी दुर्बुद्धि नष्ट होकर मुझे सच्चा ज्ञान मिल गया है । दिन-रात कृष्ण का गुणगान करने के कारण मैं काल रूपी सर्प से बच गई हूँ । कृष्ण के बिना मुझे सारा संसार निस्सार दिखाई देता है । सब कुछ नश्वर लगता है । मैंने जाँच लिया है कि कृष्ण की भक्ति ही आनंद प्रदान करनेवाली है ।

शब्दार्थ :

२. प्रेम दिवाणी - प्रेम से पागल, जौहर - जवाहर की, रत्न की; जौहरी - रत्न परीक्षक, पारखी; बैद - वैद्य, साँवलिया - कृष्ण ।

शब्दार्थ :

मीरा कहती है कि मैं कृष्ण के प्रेम में, विरह में पागल हो गई हूँ, परन्तु मेरा दर्द कोई नहीं समझ सकता । जिस प्रकार घायल की दशा घायल समझता है तथा रत्न की परख सज्जा जौहरी ही कर सकता है, उसी प्रकार मेरी दशा कृष्ण ही समझ सकते हैं और कृष्ण की भक्ति का महत्व मैं ही जानती हूँ । मेरी यह वेदना तभी मिट सकेगी जब वैद्य स्वयं कृष्ण होंगे ।

मौखिक प्रश्न :

I. उत्तर दीजिए :

१. मीरा किसकी भक्तिन थी ?
२. साधु-संगति से क्या हुआ ?
३. मीरा को संसार कैसा लगता है ?
४. मीरा किसकी दीवानी है ?
५. मीरा का इलाज कौन कर सकता है ?

लिखित प्रश्न :

II. एक वाक्य में उत्तर लिखिए :

१. मीरा किसके रंग में रंग गई है ?
२. कृष्ण भक्ति में लीन मीरा किसकी संगति में आई ?
३. दिन-रात कृष्ण का गुणगान गाते-गाते मीराबाई किससे बच जाती है ?
४. मीरा किसके विरह में दुखी होकर पागल हो गई है ?
५. रत्न की परख कौन कर सकता है ?
६. मीरा की पीज्जादा कब मिटेगी ?

III. निम्नलिखित पंक्तियों का भाव स्पष्ट कीजिए :

१. साजि सिंगार बाँधि पग धुँधरु, लोकलाज तजि नाची ।
२. उण बिन सब जग खारो लागत, और बात सब काँची ।
३. जौहरि की गति जौहरी जाणै, की जिण जौहर होय ।

IV. मीरा के दोनों पदों को कंठस्थ कीजिए ।

V. निम्नलिखित पद्यांशों की पूर्ति कीजिए :

१. मैं तो - - - - -

- - - - -

- - - - - बाँची ।

२. हे री - - - - -

- - - - -

- - - - - जौहर होय ।

VI. निम्नलिखित शब्दों के आधुनिक रूप लिखिए :

उदाहरण : तजि - त्यागकर

साँची, निसि, ब्यालु, काँची, दिवाणी, बैद, पीर ।

योग्यता-विस्तार :

- मीराबाई के समान भारत की अन्य भक्त कवयित्रियों के बारे में जानकारी प्राप्त कीजिए ।

प्रचलित कहावतें

१. अपनी ढफली अपना राग - संगटन का अभाव, जिसकी जो इच्छा हो करे।
२. आगे कुआँ पीछे खाई - दोनों ओर मुसीबत
३. आप भला तो जग भला - भले आदमी के लिए सब भले हो जाते हैं।
४. एक पंथ दो काज - एक साधन से दो काम हो जाना।
५. एक हाथ से ताली नहीं बजती - झगड़ा दोनों या सभी पक्षों के कारण होता है।
६. जिसकी लाठी उसकी भैंस - शक्तिशाली की विजय।
७. जैसा वेश वैसा भेष - जहाँ रहो, वहाँ वैसी रीति पर चलो।
८. जैसी करनी वैसी भरनी - किए का फल भोगना पड़ेगा।
९. गांगा गए तो गंगा दास, जमुना गए तो जमुना दास -
परिस्थितियों के अनुसार विचार बदलनेवाला अस्थिर व्यक्ति ।
१०. न रहेगा बाँस न बजेगी बाँसुरी - विवाद को जड़ से ही नष्ट कर देना।
११. धोबी का कुत्ता न घर का न घाट का - अस्थिरता के कारण कहीं का भी न बन पाना।
१२. दूध का दूध पानी का पानी - निरपेक्ष न्याय करना।
१३. साँप मरे न लाठी टूटे - काम बन जाए, हानि भी न हो।
१४. भागते भूत की लंगोटी भली - जो मिल गया वही काफी।
१५. सीधी उँगलियों से घी नहीं निकलता है - बिल्कुल सिधार्ह से काम नहीं चलता।
१६. सिर मुँड़ाते ही ओल पड़े - पहली बार ही अपशकुन ।

१) दहेज प्रथा :

दहेज प्रथा भारतीय समाज का कलंक है और भारतीय नारियों के लिए अभिशाप है। दहेज प्रथा भी आजकल एक ऐसी पद्धति बन गई है, जिसने विवाह योग्य कन्या के पिता का चैन छीन लिया है। इस कुप्रथा के कारण विवाह जैसा महत्वपूर्ण एवं पवित्र संस्कार "वर को खरीदने एवं बेचने की मंडी" बन गयी है। आजकल समाचार पत्रों में दहेज के कारण किसी नवयुवती की मृत्यु या उसके ऊपर अत्याचार के समाचार पढ़ने के लिए बहुत मिलते हैं। यह प्रथा एक अभिशाप बन गई है।

विवाह के अवसर पर कन्या-पक्ष की ओर से वर-पक्ष को दिए जानेवाले रूपए-पैसे और साज-सामान को दहेज कहते हैं। चल-संपत्ति में प्रायः आभूषण, काँर, सोने-चाँदी के जेवर से लेकर काँसे-पीतल के बर्तन आदि तथा अचल-संपत्ति में कबी-कभी खेत, मकान आदि तक माँगे जाते हैं। प्राचीन काल में कन्या का पिता स्वेच्छा से अपनी कन्या को दहेज देता था। कन्या से माता-पिता दहेज देने में प्रसन्नता और संतोष अनुभव करते थे।

कालांतर में दहेज के लिए दबाव और जोर जबरदस्ती का बाजार हो गया। बहुत-सी कन्याओं का विवाह रूकने लगा और केवल धनी माँ-बाप की कन्याएँ अच्छे परिवारों में विवाहित होने लगीं। कुछ लालची सास-ससुरों ने विवाह के बाद अपनी बहुओं को सताना भी प्रारंभ कर दिया, जिसका परिणाम विषपान और आग में जलाना तक हो गया। कभी-कभी धन के लालच में लड़केवाले पहली वधू की हत्या करके या उसे अयोग्य बता कर अपने पुत्र का दूसरा विवाह भी कर डालते हैं। कन्या के गरीब माता-पिता के लिए यह सबसे बड़ा-अभिशाप सिद्ध हो रहा है। ऋण लेकर विवाह करने

पर कभी-कभी उसका समस्त जीवन ऋण चुकाने में निकल जाता है। दहेज की समस्या के कारण अपने माता - पिता की दयनीय दशा देखकर कभी-कभी कन्याएँ इतनी निराश और दुःखी हो जाती हैं कि अपना विवेक खोकर आत्महत्या कर लेती हैं। वे सोचती हैं कि अपने माता-पिता की शोचनीय दशा का कारण वे ही हैं। इसलिए "न रहेगा बाँस न बजेगी बाँसुरी" की कहावत को चरितार्थ करती हुई वे अपना जीवन ही समाप्त कर लेती हैं।

सरकार ने इस प्रथा को दूर करने के लिए कानून बना दिया है। दहेज के संदर्भ में नव विवाहिताओं के मृत्यु संबंधी मामलों में नव वधुओं के पति, सास-ससुर आदि को मृत्युदण्ड देकर इस कुप्रथा को समाप्त करने की दिशा में प्रशंसनीय प्रयास किया जा रहा है। इस प्रथा के विरोध में देश के अनेक भागों में महिलाओं के संगठन उठ खड़े हुए हैं। नवयुवकों और युवतियों को आगे बढ़कर इसे जल्दी-से-जल्दी समाप्त करना चाहिए।

भारत की जनसंख्या

भारत की बढ़ती हुई जनसंख्या की समस्या काफी गंभीर है। तेजी से बढ़ती हुई जनसंख्या के कारण विकास और प्रगति की सारी योजनाएँ विफल होती जा रही हैं। जनसंख्या वृद्धि की समस्या अनेक अन्य समस्याओं को उत्पन्न करती है। प्रत्येक व्यक्ति की मुख्य आवश्यकताएँ हैं - रोटी कपड़ा, और मकान।' आज अनेक देशों में लाखों व्यक्तियों को खाने के लिए पेट भर रोटी नहीं मिलती, शरीर ढकने के लिए कपड़ा नहीं मिलता और रहने के लिए मकान नहीं मिलता है। वे बिना घर-बार के खुले आसमान के नीचे जीवन बिताते हैं।

आज यातायात के साधनों का बहुत विकास हुआ है। लाखों बसों रात-दिन देश की सड़कों पर दौड़ती हैं। जहाँ पर पहले दो-ती रेलगाड़ियाँ चलती थी, वहाँ अब दस-दस गाड़ियाँ चलने लगी हैं। लेकिन जनसंख्या के कारण हम सुख से यात्रा नहीं कर पाते। बसों और गाड़ियों में हमें अपर भीड़ का सामना करना पड़ता है। रेलगाड़ियों के लिए टिकट खरीदने में घंटों लंबी-लंबी पंक्तियों में खड़ा रहना पड़ता है। कभी-कभी लंबी-लंबी यात्राएँ खड़े-खड़े करनी पड़ती हैं। स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद विध्यालयों की संख्या पहले से अधिक बढ़ गई है। फिर भी अनेक विध्यार्थियों की शिक्षा इसलिए रुक जाती है कि उन्हें किसी विध्यालय में प्रवेश नहीं मिलता। चारों ओर भीड़ ही-भीड़ दिखाई देती है।

जनसंख्या की दृष्टि से हमारा भारत, संसार का दूसरा सबसे बड़ा देश है। आज हमारे देश की जनसंख्या लगभग करोड़ हो गई है। हमको भीषण संकट का सामना करना पड़ेगा।

इस प्रकार जनसंख्या वृद्धि अनेक समस्याओं के मूल में विध्यमान है। इसीलिए हमारी सरकार ने परिवार कल्याण की योजना चलाई है। इस योजना को सफल बनाने में सहयोग प्रदान करना भारत के प्रत्येक नागरिक का कर्तव्य है। हमारे युवक और युवतियाँ आगे आकर एक-एक गाँव में जाकर एक-एक व्यक्ति को सचेत करें, तभी पूर्ण सफलता मिल सकती है। यति हम अपना, अपने परिवार का, अपने देश का कल्याण करना हैं, तो हमें परिवार नियोजन का पालन करना ही होगा। इस धर्म का पालन ही आज सच्ची देश भक्ति है।

पत्र-लेखन

शिकायती पत्र :

बिजली का तार ठीक कराने के लिए प्रार्थना पत्र

दिनांक : 22.06.2016

सेवा में,
सहायक विद्युत् अधिकारी,
बिजली सेवा विभाग,
त्यागराज नगर, बेंगलूरु - 28

महोदय,

निवेदन है कि पिछले पाँच दिनों से बिजली का तार सार्वजनिक मार्ग पर गिरा पड़ा है। इससे लोगों को आने-जाने में कठिनाई हो रही है। क्योंकि तार में बिजली आती रहती है। घर में भी बत्तियाँ ठीक तरह से नहीं जलतीं। इसलिए जल्द से जल्द आकर तारों को ठीक करने की कृपा कीजिए।

सधन्यवाद

एम.यु.जाधव
घर, नं - 183,
तीसरा मेन रोड,
त्यागराज नगर,
बेंगलूरु - 560028.

भवदीय
एम.यु.जाधव

आवेदन पत्र :

१) नौकरी के लिए आवेदन-पत्र

घर, नं - 266/31,

काटनपेट,

बेंगलूर - 560 053.

तारीख - 22-06-2016

सेवा में,

प्रधान सचिव,

कर्नाटक महिला हिंदी सेवा समिति,

चामराजपेट, बेंगलूर - 560 018.

विषय : अध्यापक-पद के लिए आवेदन पत्र।

महोदय,

आज के "इंडियन एक्सप्रेस" समाचार पत्र में प्रकाशित आपके विज्ञापन में सूचित अध्यापक-पद के लिए मैं यह आवेदन पत्र आपके विचारार्थ प्रेषित कर रहा हूँ। मेरी शैक्षणिक योग्यता अनुभव आदि का विवरण इस प्रकार हैं।

1. नाम - नरेश कुमार
2. पिता का नाम - रतन कुमार
3. जन्म की तारीख और आयु - 16.01.1970 (22वर्ष)
4. वर्तमान पता - घर नं - 266/31, काटनपेट, बेंगलूर - 53.
5. क्या आप अनुसूचित जाति/जनजाति/ पिछड़ी जाति के हैं? - नहीं

6. यदि हाँ, तो जाति का नाम लिखिए। -
7. क्या आप भारतीय नागरिक है? - हाँ
8. यदि नहीं तो अपनी नागरिकता लिखिए -
9. योग्यता - एम. ए. (हिंदी) - प्रथम श्रेणी, बेंगलूर विश्वविद्यालय।
10. अनुभव - बेंगलूर हाईस्कूल में दो साल तक हिंदी अध्यापन कार्य
11. भाषा ज्ञान - हिंदी, कन्नड, अंग्रेजी आदि।

मैं एक परिश्रमी, ईमानदार, अनुशसित एवं स्वस्थ युवक हूँ। मेरा संपूर्ण सदा रेकार्ड प्रशंसनीय रहा है। सभी प्रमाण पत्रों की प्रतिलिपियाँ संलग्न हैं। आशा है, सेवा करने का अवसर प्रदान कर अनुगृहति करेंगे।

हार्दिक अन्यवाद,

भवदीय

नरेश कुमार

ढाँचे के आधार पर कहानी लेखन :

नीचे कुछ कहानियों की रूपरेखाएँ दी गई हैं। उनके आधार पर कहानियाँ

लिखिए और उनके उचित शीर्षक दीजिए -

(क)

- पुत्र गधे पर, पिता पैदल, मार्ग में सामने से आते तीन आदमी।
- पिता गधे पर, पुत्र पैदल, मार्ग में कुछ आदमी।
- पिता तथा पुत्र गधे पर, रास्ते में तीन स्त्रियाँ।
- पिता-पुत्र दोनों पैदल, साथ में गधा और सामने कुछ पथिक।
- पिता-पुत्र गधे को लाठी की सहायता से कंधे पर उठाकर ले जाते हुए।

(ख)

- बंदर का मनुष्य की चीज़ों को तोड़ना-फोड़ना।
- मनुष्य का बाहर बैठकर दाढ़ी बनाना और पेड़ पर बैठे बंदर का उसे देखना।
- मनुष्य का घर के अंदर जाना तथा बंदर का ब्लेड से दाढ़ी बनाने की नकल करना।
- बंदर के चेहरे का लहलुहान हो जाना।

(ग)

- एक बालक का गुड़ अधिक खाना।

- माँ का तंग होना।
- साधु के पास जाना।
- एक सप्ताह बाद आने का आदेश।
- गुड़ न खाने का उपदेश।
- माँ की जिज्ञासा।
- साधु का स्वयं एक सप्ताह गुड़ न खाना।

(घ)

- कौआ और हंस एक साथ।
- कौए का हंस की हँसी उड़ाना।
- सागर के ऊपर उड़ान का मुकाबला करना।
- कौए का तेज़ उड़कर हंस से आगे रहना।
- हंस का स्वाभाविक गति से उड़ना।
- कौए का थक जाना।
- सागर में गिरकर डूबने लगना।
- हंस का उसे बचाना।

निम्नलिखित कहानी को पढ़कर बताइए कि यदि 'कौआ' बुद्धिमान होता, तो क्या करता।

एक दिन एक कौए को रोटी का एक टुकड़ा मिला। वह उसे चोंच में पकड़कर एक वृक्ष की शाखा पर बैठ गया। इतने में वहाँ एक लोमड़ी आ गई? कौए की चोंच में रोटी का टुकड़ा देखकर उसके मुँह में पानी भर आया।

उसने रोटी हड़पने का एक उपास सोचा। वह कौए से बोली, "भाई कौए, तुम बहुत सुंदर हो। तुम्हारे पंख कैसे चमकीले हैं। तुम्हारा स्वर भी बहुत मीठा होगा। क्या तुम मुझे अपना गाना नहीं सुनाओगे?" अपनी प्रशंसा सुनकर कौआ फूला नहीं समाया। वह काँव-काँव कर गाने लगा। उसके चोंच खोलते ही रोटी का टुकड़ा नीचे गिर पड़ा। चालाक लोमड़ी ने वह टुकड़ा उठाया और चलती बनी।

संभावित उत्तर

यदि कौआ बुद्धिमान होता तो वह या तो लोमड़ी की बात अनसुनी करके मजे में रोटी खाता रहता या रोटी खाने के बाद गाना गाता या टुकड़े को पंजे दबाकर गाना गाता।
